04 - मतों की भरपूर फसल लेने हेतु उपयोगी सलाह

05 - भारतीय कला एवं कलाकार, परिस्थितियों से संघर्ष

A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 09 नवंबर, 2025

06 - आमला रेलवे के लौटेंगे पुराने दिन, वार्ड क्र. 5 से सटी हुई रेलवे की रिक्त...

07 - 'हक़' से फिर चर्चित हुआ शाहबानो विवाद

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 11 अंक 47, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

आम जीवन का खास दृश्य

फोटो: बंसीलाल परमार

सुप्रभात

होने न होने के मध्य
एक युद्ध चलता है
होने की शक्ति बड़ी होती है
ना होने की आस
होने को कौन टाल सकता है!
ना होने के लिए मात्र
सोचा जा सकता है
प्रार्थना की जा सकती है
होने के समक्ष सिर नवाए
अक्सर हम ना होने की दुआ मांगते हैं।

– कौशलेंद्र सिंह

पीएम ने महिलाओं को सौंपी एनडीए की जीत की 'कमान'

● मां सीता की जन्मभूमि सीतामढ़ी से प्रधानमंत्री मोदी ने चल दिया बड़ा दांव

कहा-महागठबंधन से छुटकारा दिलाना अब 'आधी आबादी' के हाथ में है

सीतामढ़ी (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को मां सीता की जन्मस्थली सीतामढ़ी से महिलाओं के हाथ में एनडीए के जीत की लगाम सौंपते कहा कि महागठबंधन से यहां की जनता को छुटकारा दिलाना आपके हाथ है। कट्टा और दोनाली वालों के राज से बचाएंगे, तभी बिहार का बच्चा रंगदार नहीं बन सकता, डॉक्टर बनेगा, इंजीनियर बनेगा, अदालत में जज बनेगा। पीएम नरेंद्र मोदी ने आज के संबोधन में बिहार के भविष्य के प्रति महिलाओं को सचेत किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज चुनाव के

प्रथम चरण में लीड लेने का क्रेडिट आधी आबादी को देते कहा कि बिहार पहले चरण में रिकॉर्ड मतदान के लिए आपका आभारी है। बिहार की बहन-बेटियों ने भरोसा दिलाया कि मां सीता के आशीर्वाद से बिहार विकसित होगा। बिहार की बहनों-बेटियों ने भी एनडीए की रिकॉर्ड विजय पक्की कर दी है। हम आज सीतामढ़ी में जो माहौल देख रहे हैं, वो दिल को छूने वाला है। ये माहौल भी इस बात का संदेश दे रहा है कि नहीं चाहिए कट्टा सरकार, फिर एक बार एनडीए सरकार।

सात शून्य का रिकॉर्ड, एनडीए का प्लान

दरअसल सीतामढ़ी में सीटों की संख्या बढ़ने का स्पेस है। गत चुनाव में एनडीए ने सात विधानसभा सीटों में पांच पर विजय प्राप्त की थी। रीगा विधानसभा से बीजेपी के मोतीलाल प्रसाद बथनाहा से बीजेपी के अनिल कुमार परिहार से बीजेपी की गायत्री देवी, सीतामढ़ी से बीजेपी के मिथिलेश कुमार और सुरसंड से जदयू के दिलीप कुमार ने जीत दर्ज की थी। एनडीए ने दो सीटों को गंवाया था। बाजपट्टी से राजद के मुकेश यादव और बेलसंड से राजद के संजय गुप्ता ने जदयू के उम्मीदवार को हराया था। एनडीए का प्लान सीतामढ़ी में जीतना है।

धर्म रथ का पहिया भी घुमाया

आधी आबादी के बाद प्रधानमंत्री ने धर्म रथ का पहिया घुमाते हुआ कहा कि 8 नवंबर, 2019 को माता सीता की इस धरती पर आया था। यह वही समय था कि उसके अगले ही दिन मुझे पंजाब में करतारपुर साहिब कॉरिडोर के लोकार्पण के लिए निकलना था। अगले ही दिन सुप्रीम कोर्ट में अयोध्या पर फैसला भी आना था। उस वक्त ही प्रार्थना किया कि सीता मैया फैसला रामलला के पक्ष में आए और ऐसा ही हुआ। आज मां सीता की इस पुण्य भूमि पर आया हूं, आपका आशीर्वाद ले रहा हूं। और कह रहा हूं कि मां सीता के आशीर्वाद से ही बिहार विकसित बिहार बनेगा और ये चुनाव तय करेगा कि आने वाले सालों में बिहार के बच्चों का भविष्य क्या होगा।

गीता ज्ञान प्रतियोगिता में अधिक से अधिक हो हिस्सेदारी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव बोले, ऑनलाइन प्रतियोगिता में इस वर्ष 70 पुरस्कार

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गीता जयंती, अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के गरिमापूर्ण आयोजन के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण की जाएं। ऑनलाइन श्रीमद् भगवद् गीता ज्ञान प्रतियोगिता में अधिकाधिक भागीदारी के प्रयास किए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इसके लिए संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए हैं। मध्यप्रदेश के 70 वें स्थापना वर्ष में इस स्पर्धा में 70 पुरस्कारों का प्रावधान गीता ज्ञान स्पर्धा में किया गया है। पुरस्कार में प्रथम पुरस्कार एक लाख रूपए, द्वितीय पुरस्कार 51 हजार रूपए का रहेगा। इसके साथ ही 31 हजार रूपए के तीन तृतीय पुरस्कारों सहित 15 लैपटाप, 30 ई-बाइक और 20 ई-रिक्शा का वितरण भी किया जाएगा। श्रेष्ठ ज्ञान स्तर के लिए प्रतियोगिता में 11 से 25 वर्ष आयु के विद्यार्थियों को प्रोत्साहन स्वरूप 2 वर्ष तक शिक्षावृत्ति देने का प्रावधान भी किया गया है। प्रतियोगिता में नागरिकों, विद्यार्थियों के साथ ही प्रतियोगिता में कारावास के बंदी भी हिस्सा ले सकेंगे। यह ऑनलाइन प्रतियोगिता प्रदेश भर में शिक्षण संस्थानों के सहयोग से आयोजित की जा रही है।

कुरुक्षेत्र में मध्यप्रदेश की कला होगी प्रदर्शित– 24 नवंबर से 1 दिसंबर की अवधि में कुरुक्षेत्र में हो रहे अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2025 में मध्यप्रदेश के आंचलिक और जनजातीय व्यंजनों के स्टॉल लगाए जाएंगे। इसके साथ ही मध्यप्रदेश की जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी की ओर से प्रदर्शनी, मेले और नाट्य समारोह के आयोजन होंगे। नाट्य समारोह में श्री पुनीत इस्सर और श्री मोहित शेवानी मुंबई, श्री शिरीष राजपुरोहित उज्जैन के कार्यक्रम होंगे। जनजातीय संग्रहालय के सौजन्य से जनजातीय नृत्यों की प्रस्तुति भी होगी।

संसद का विंटर सेशन 1 से 19 दिसंबर तक

● 15 बैठकें होंगी, एसआईआर पर फिर हंगामे के आसार

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद का शीतकालीन सत्र (विंटर सेशन) 1 दिसंबर से 19 दिसंबर तक चलेगा। 19 दिन में पूरे सत्र के दौरान 15 बैठकें होंगी। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इसकी जानकारी दी। इससे पहले 21 जुलाई से 21 अगस्त तक संसद का मानसून सत्र चला था। सत्र के पहले दिन राज्यसभा के तत्कालीन उपसभापति जगदीप धनखड़ ने इस्तीफा दे दिया। फिर पूरा सत्र बिहार में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन को लेकर विपक्ष के हंगामे की भेंट चढ़ गया था।

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा में दो आतंकी कर दिए ढेर

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के केरन सेक्टर में शनिवार को सुरक्षाबलों ने दो आतंकियों को मार गिराया। भारतीय सेना को नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पार से शुक्रवार को घुसपैठ की खुफिया जानकारी मिली थी। इसके बाद आतंकियों के खिलाफ सर्च ऑपरेशन चलाया था। भारतीय सेना की यूनिट चिनार कॉर्प्स ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बताया कि सर्च ऑपरेशन के दौरान आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। सुरक्षाबलों की जवाबी फायरिंग में दो आतंकी मारे गए।

● **जम्मू-कश्मीर की जेलों में पुलिस का छापा–** कुपवाड़ा में मुठभेड़ के बीच जम्मू-कश्मीर पुलिस की काउंटर इंटेलीजेंस कश्मीर ने शनिवार को घाटी की कई जेलों में छापा मारा। हालांकि, अधिकारियों ने बताया कि तलाशी के दौरान अगर कुछ भी अवैध बरामद होता है, तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, अफसरों ने इसे नियमित जांच बताया।

● एक से 19 दिसंबर तक चलेगा संसद का शीतकालीन सत्र

कई मुद्दों पर गरमाएगी सियासत!

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने केंद्र सरकार के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है, जिसके तहत संसद का शीतकालीन सत्र एक दिसंबर 19 दिसंबर तक आयोजित किया जाएगा। हालांकि यह अवधि संसदीय कार्यों की आवश्यकताओं के अनुसार बढ़ाई जा घटाई भी जा सकती है। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने इस बारे में जानकारी साझा की। किरेन रिजिजू ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा, राष्ट्रपति महोदया ने सरकार के प्रस्ताव को स्वीकृति दी है। संसद का शीतकालीन सत्र 1 दिसंबर से 19 दिसंबर तक चलेगा। हम एक रचनात्मक और सार्थक सत्र की उम्मीद करते हैं, जो हमारे लोकतंत्र को मजबूत करेगा और जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति करेगा। बिहार विधानसभा चुनाव के बाद यह सत्र होगा।

एसआईआर भी छिड़ सकता है घमासान

उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात समेत 12 राज्यों में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर भी विपक्ष सरकार को घेरने की कोशिश करेगा। पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी की सरकार ने अभी से अपना रुख स्पष्ट कर दिया है। पश्चिम बंगाल में एसआईआर का टीएमसी जबरदस्त विरोध कर रही है।

अविवाहित बेटी पिता से गुजारा-भत्ता नहीं ले सकती

केरल हाईकोर्ट बोला-क्रिश्चियन पर्सनल लॉ भी इसकी इजाजत नहीं देता; ईसाई पिता ने याचिका लगाई थी

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल हाईकोर्ट ने कहा ईसाई धर्म मानने वाली अविवाहित बेटी अपने पिता से गुजारा-भत्ता लेने का दावा नहीं कर सकती। अदालत ने स्पष्ट किया कि क्रिश्चियन पर्सनल लॉ में इसके लिए कोई प्रावधान नहीं है। जबकि मुस्लिम पर्सनल लॉ और हिंदू दत्तक एवं भरण-पोषण अधिनियम में ऐसा हक मौजूद है। केरल हाईकोर्ट के जस्टिस डॉ. कौसर एडप्पागथ की बेंच ने 29 अक्टूबर की एक याचिका पर सुनवाई की, जिसमें 65 वर्षीय ईसाई व्यक्ति ने फैमिली कोर्ट के उस आदेश को चुनौती दी जिसमें उसे अलग रह रही पत्नी को हर महीने 20,000 रुपए और 27 साल की अविवाहित बेटी को 10,000 रुपए भरण-पोषण देने का निर्देश दिया गया था। याचिकाकर्ता का कहना था कि उसकी बेटी याचिका दायर होने के समय बालिग थी, इसलिए वह भरण-पोषण पाने की हकदार नहीं है। साथ ही उसने कहा कि उसकी पत्नी उसे छोड़कर अलग रहती है और आर्थिक रूप से सक्षम है। हाईकोर्ट ने याचिका को आंशिक मंजूरी देते हुए बेटी को दिए जाने वाले 10,000 रुपए मासिक भरण-पोषण के आदेश को रद्द कर दिया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 09 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

किसानों के हित के लिए संकल्पित हैं मुख्यमंत्री डॉ. यादव

कृषि मंत्री कंषाना ने भावांतर योजना में सोयाबीन का जारी किया रेट

भोपाल। किसान कल्याण और कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव किसान हित और उनके कल्याण के लिए संकल्पित है। उन्होंने प्रदेश के अन्नदाताओं की सोयाबीन उपज का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का पूर्ण लाभ दिलाने के लिए भावांतर योजना लागू की है। साथ ही किसान हितैषी अनेक योजनाएं भी संचालित की जा रही हैं। किसानों को किसी तरह का नुकसान नहीं होने दिया जाएगा। कृषि मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि भावांतर योजना 2025 अंतर्गत सोयाबीन विक्रेता किसानों के लिए 8 नवंबर को 4033 रुपए प्रति क्विंटल का मॉडल रेट जारी किया गया है। यह मॉडल रेट उन किसानों के लिए जारी किया गया है, जिन्होंने अपनी सोयाबीन की उपज मंडी प्रांगणों में विक्रय की है। उक्त मॉडल रेट के

आधार पर ही भावांतर की राशि की गणना की जाएगी।

भावान्तर योजना को लेकर किसानों में उत्साह- कृषि मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि भावान्तर योजना को लेकर किसानों में भारी उत्साह मंडियों में देखा जा रहा है। योजनांतर्गत 9 लाख 36 हजार 352 कृषकों द्वारा पंजीयन कराया गया है। योजना प्रारंभ से प्रदेश की 243 मंडियो एवं उप मंडियो में 1 लाख 44 हजार 180 किसानों द्वारा 24 लाख 67 हजार 100 क्विंटल सोयाबीन विक्रय किया गया। भावान्तर योजना अंतर्गत सर्वाधिक सोयाबीन की आवक कृषि उपज मंडी समिति गंजबासौदा, देवास, उज्जैन, इंदौर तथा आगर में रही। समस्त मंडियों में विपणन की कार्यवाही सुचारू रूप से संपादित की जा रही है। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा कि राज्य सरकार किसान हितैषी है। प्रदेश के अन्नदाताओं को उपज के न्यूनतम समर्थन मूल्य का पूरा लाभ दिलाने के लिए सोयाबीन उत्पादक किसानों को अतिरिक्त 1300 रूपए प्रति क्विंटल दिए जाएंगे।

भोपाल एम्स में 2026 तक तैयार होगा सेंट्रलाइज्ड कैंसर ब्लॉक

प्रदेश में इस तरह का पहला,आधुनिक सुविधाएं एक छत के नीचे

भोपाल। एम्स में प्रदेश का पहला सेंट्रलाइज्ड कैंसर ब्लॉक 2026 तक तैयार हो जाएगा, जिसमें गामा नाइफ और पीईटी-सीटी स्कैन जैसी एडवांस सुविधाएं एक ही जगह मिलेंगी। यह ब्लॉक हर साल भोपाल पहुंचने वाले 36 हजार से ज्यादा कैंसर मरीजों को जांच से लेकर कीमोथेरेपी, सर्जरी, रेडिएशन थेरेपी, मेंटल हेल्थ काउंसलिंग और स्टेम सेल ट्रीटमेंट तक की सभी सेवाएं एक ही छत के नीचे उपलब्ध कराएगा, जिससे उन्हें अलग-अलग विभागों में भटकना नहीं पड़ेगा और गंभीर मरीजों को प्राथमिकता के आधार पर इलाज मिल सकेगा। मध्यप्रदेश में कैंसर मरीजों के लिए एम्स भोपाल में प्रदेश का पहला सेंट्रलाइज्ड कैंसर ब्लॉक तैयार किया जा रहा है। यह ब्लॉक 2026 तक शुरू हो जाएगा। इस मॉडर्न ब्लॉक में कैंसर के मरीजों को गामा नाइफ और पीईटी-सीटी स्कैन जैसी एडवांस सुविधाएं एक ही जगह पर मिलेंगी।

फिलहाल 6 महीने तक की वेटिंग- अभी सिटी स्कैन और एमआरआई जैसी जांच के लिए 6 माह से एक साल तक की वेटिंग है। इन परेशानियों से मरीजों को बचाने के लिए यह सेंट्रलाइज्ड ब्लॉक तैयार किया जा रहा है। भोपाल एम्स में हर साल 36000 से ज्यादा कैंसर मरीज पहुंचते हैं। इनमें से ज्यादातर मरीज अन्य जिलों से आते हैं।

एक ही जगह मिलेंगी सभी सुविधाएं- नए कैंसर ब्लॉक में मरीजों को जांच से लेकर ट्रीटमेंट तक की सभी सेवाएं एक ही स्थान पर मिलेंगी। इसमें कीमोथेरेपी, सर्जरी, टारगेट थेरेपी, रेडिएशन थेरेपी, मेंटल हेल्थ काउंसलिंग और स्टेम सेल ट्रीटमेंट की व्यवस्था होगी। एम्स प्रशासन का कहना है कि फिलहाल कैंसर मरीजों को अलग-अलग विभागों में भटकना पड़ता है। जांच एक जगह, सर्जरी दूसरी जगह और रेडिएशन तीसरी जगह होती है। लेकिन इस ब्लॉक के शुरू होने के बाद सभी विशेषज्ञ एक साथ मिलकर मरीज की स्थिति के अनुसार संयुक्त फैसले लेंगे।

बिहार चुनाव के बाद नीतिश को 'किनारे' कर देगी बीजेपी

- मल्लिकार्जुन खरगे का बड़ा दावा, कहा-एनडीए की कोई लहर नहीं

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के पहले चरण का मतदान संपन्न होने और दूसरे चरण की तैयारी के बीच, कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने एनडीए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतिश कुमार पर बड़ा हमला बोला है। एक निजी चैनल को दिए खास इंटरव्यू में मल्लिकार्जुन खरगे ने दावा किया कि बीजेपी और जेडीयू का रिश्ता सिर्फ सत्ता के लिए है। चुनाव के बाद नीतिश कुमार को 'किनारे' कर दिया जाएगा। पहले चरण के मतदान के बाद महागठबंधन की स्थिति पर मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का यह कहना कि एनडीए की लहर है, यह सिर्फ उनका भ्रम है। उन्होंने दावा किया कि इस बार एनडीए और महागठबंधन में टक्कर कांटे की है। उन्होंने बताया कि कांग्रेस और गठबंधन मजबूती से लड़ रहे हैं, और ग्राउंड रिपोर्ट कहती है कि जनता का अच्छा समर्थन मिल रहा है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने नीतिश कुमार और बीजेपी के रिश्ते पर सवाल उठाते हुए कहा कि दोनों दलों में दिल से एकजुटता नहीं है, वे केवल सत्ता के लिए साथ हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी पहले नीतिश को बिगड़ा हुआ बच्चा कहते थे और आज उनकी तारीफ कर रहे हैं। बीजेपी और जेडीयू में अंदरूनी मतभेद साफ हैं। चुनाव के बाद बीजेपी नीतिश को किनारे कर देगी, ये तय है। शाह के बयान पर कांग्रेस चीफ ने पलटवार किया।

कपिल शर्मा के कैफे पर फायरिंग करने वाले होंगे डिपोर्ट

- जबरन वसूली-फायरिंग पर सख्त हुई कनाड़ा सरकार, लारेंस गैंग के हैं तीनों आरोपी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। कनाडा में मशहूर कमेडियन कपिल शर्मा के कैफे केप्स कैफे पर फायरिंग करने वाले तीन अपराधियों को कनाडा सरकार ने डिपोर्ट करने के आदेश जारी कर दिए हैं। अभी इनकी शिनाख्त नहीं बताई गई है।

विदेशी मीडिया रिपोर्ट के अनुसार यह सभी आरोपी लारेंस बिश्नोई गैंग से संबंधित हैं,जिसे हाल ही में आतंकी संगठन घोषित किया गया है। यह कार्रवाई दा कनाडा बॉर्डर सर्विसेज एजेंसी (सीबीएसए) की

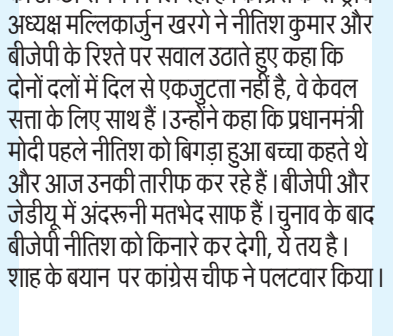

तरफ से की गई है। एजेंसी ने ब्रिटिश कोलंबिया में पंजाबी मूल के व्यवसाय मालिकों को निशाना बनाकर चल रहे जबरन वसूली नेटवर्क से जुड़े एक जांच के बाद तीन भारतीय नागरिकों को निर्वासित कर दिया है। 7 नवंबर को घोषित ये निर्वासन, बीसी एक्सटॉर्शन टास्क फोर्स के तहत किया गया पहला निर्वासन है, जो सीबीएसए, आरसीएमपी और स्थानीय पुलिस एजेंसियों का एक संयुक्त अभियान है। टास्क फोर्स की स्थापना इस वर्ष के प्रारंभ में हुई थी।

तेजी से बढ़ेगी ठंड; बारिश की भी चेतावनी

सावधान! 4-5 डिग्री और गिरने वाला है तापमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम तेजी से करवट ले रहा है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार, बंगाल की खाड़ी में निचले क्षोभमंडल स्तर पर चक्रवाती हवाओं का क्षेत्र सक्रिय है। हरियाणा, असम और कर्नाटक के आसपास के इलाके भी इसकी चपेट में हैं। इसके प्रभाव से तमिलनाडु में 8 से 9 नवंबर तक बारिश होगी। केरल और माहे में 8 से 10 नवंबर तक अधिकांश स्थानों पर हल्की से मध्यम बरसात हो सकती है। गरज के साथ बौछारें पड़ने की भी संभावना है, जिसमें कुछ स्थानों पर भारी बारिश भी हो सकती है। राजस्थान, पंजाब, जम्मू, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों में रात का तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से कम बना हुआ है। हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में यह सामान्य से 2-5 डिग्री सेल्सियस कम है। अगले 6-7 दिनों तक उत्तर-पश्चिम और इससे सटे मध्य भारत के मैदानी इलाकों में

न्यूनतम तापमान सामान्य से 2-5 डिग्री कम रहने का अनुमान है। आगामी 48 घंटों में मध्य और पश्चिम भारत के कई हिस्सों में न्यूनतम तापमान में 2-3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट संभव है। इसके बाद 4-5 दिनों तक कोई बड़ा बदलाव नहीं होगा। पूर्वी भारत में अगले 3 दिनों में 3-4 डिग्री सेल्सियस की गिरावट के बाद अगले 3-4 दिनों में कोई खास बदलाव नहीं होगा। जम्मू-कश्मीर के अधिकांश हिस्सों में रात का तापमान सामान्य से नीचे दर्ज किया गया। श्रीनगर में मौसम की सबसे सर्द रात दर्ज की गई, जहां न्यूनतम तापमान 0.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। घाटी में औसत तापमान एक से तीन डिग्री सेल्सियस कम दर्ज किया गया। मौसम विभाग के अनुसार, कश्मीर के ऊपरी इलाकों में हाल ही में हुई हिमपात के कारण घाटी में तापमान में गिरावट आई है। कई इलाकों में न्यूनतम तापमान शून्य से नीचे दर्ज किया गया। अनंतनाग जिले के पर्वतीय रिसॉर्ट पहलगाम में शून्य से नीचे 3.0 डिग्री सेल्सियस तापमान रिकॉर्ड किया गया, जो कश्मीर का सबसे ठंडा स्थान रहा। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटों के दौरान मुख्यतः मौसम शुष्क रहने का अनुमान व्यक्त किया है। अगले दो दिनों में मौसम में कोई बड़ा बदलाव होने की उम्मीद नहीं है।

लाड़ली बहनों के खाते में इसी महीने आएंगे 1500 रुपए

सीएम ने निभाया वादा, 12 नवंबर को मिलेगी नई किस्त

भोपाल। मुख्यमंत्री मोहन यादव अपनी लाड़ली बहनों से किया वादा पूरा करने जा रहे हैं। राज्य की प्रमुख लाड़ली बहना योजना के 1.26 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को अब हर महीने रू. 1500 मिलेंगे। यह राशि पहले रू. 1250 प्रति माह थी। यह बढ़ोतरी भाई दूज के बाद से लागू होनी थी, लेकिन सरकारी सूत्रों के अनुसार, 12 नवंबर को नर्मदापुरम जिले के बाबई में एक राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री स्वयं लाभार्थियों के खातों में रू. 1500 की राशि ट्रांसफर करेंगे। महिला एवं बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया ने भी इसकी पुष्टि की है कि नवंबर से यह बढ़ी हुई राशि मिलनी शुरू हो जाएगी। यह पिछले दो सालों में इस योजना के तहत पहली वृद्धि है। मुख्यमंत्री ने 12 सितंबर 2025 को घोषणा की थी कि लाड़ली बहना लाभार्थियों को हर महीने रू. 1500 मिलेंगे, जिसे धीरे-धीरे रू. 3000 प्रति माह तक बढ़ाया जाएगा। 12 अक्टूबर 2025 को, 1.26 करोड़ से अधिक लाभार्थियों के खातों में रू. 1541 करोड़ की 29वीं किस्त भेजी गई थी।

दिवाली बोनस का किया था ऐलान- सरकार ने दिवाली बोनस के तौर पर 'भाई दूज' से रू. 1500 देने का वादा किया था। 18 अक्टूबर 2025 को मुख्यमंत्री ने 'भाई दूज' पर रू. 250 अतिरिक्त जमा करने और अगले महीने से रू. 1500 देने की घोषणा की थी। हालांकि, 23 अक्टूबर 2025 को लाभार्थियों को भाई दूज पर वादा किया गया रू. 250 अतिरिक्त नहीं मिला, लेकिन सरकार ने नवंबर से रू. 1500 प्रति माह की राशि बढ़ाने का अपना वादा दोहराया। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की शुरुआत पिछली भाजपा सरकार ने मार्च 2023 में, विधानसभा चुनावों से ठीक पहले की थी। शुरुआत में, महिला लाभार्थियों को रू. 1000 प्रति माह देने की घोषणा की गई थी। अगस्त 2023 में, सरकार ने अक्टूबर 2023 से राशि बढ़ाकर रू. 1250 प्रति माह करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने दिवाली से मौजूदा रू. 1250 प्रति माह से बढ़ाकर रू. 1500 प्रति माह करने की घोषणा की थी। इस योजना के तहत लाभार्थियों की संख्या 1.26 करोड़ है। 20 अगस्त 2023 के बाद से योजना के तहत कोई नया पंजीकरण शुरू नहीं किया गया है। पिछले महीने तक, लाड़ली बहना योजना के तहत राज्य सरकार ने 29 किस्तों में रू. 45,000 करोड़ हस्तांतरित किए हैं।

देश में प्रॉपर्टी खरीदने-बेचने का सिस्टम 300 साल पुराना

- सुप्रीम कोर्ट बोला- इससे प्रापर्टी खरीदना सदमे जैसा हुआ ● कहा-हमें नए ढंग से सोचना होगा, विकल्प भी तलाशने होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने जमीन की रजिस्ट्री और जमीन के मालिकाने के ढांचे में बुनियादी सुधार की जरूरत बताई है। कोर्ट ने कहा कि ब्रिटिश राज के समय के कानूनों पर टिके मौजूदा ढांचे ने भ्रम, अकुशलता और बड़े स्तर पर मुकदमे पैदा किए हैं।

जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने सुझाव दिया कि ये समस्याएं खत्म करने के लिए सरकार ब्लॉकचेन जैसी टेक्नॉलॉजी इस्तेमाल करने पर विचार करे। साथ ही, विधि आयोग को इस पर विस्तृत अध्ययन करने को कहा। आयोग से केंद्र, राज्य सरकारों, विशेषज्ञों और अन्य संबंधित पक्षों से रायशुमारी करके रिपोर्ट सौंपने को कहा गया है। प्रॉपर्टी खरीदने-बेचने का सिस्टम तीन सौ साल पुराने कानूनों से संचालित है। ये अलग दौर में बने थे। लेकिन, आज भी रीढ़ बने हुए हैं। इन कानूनों ने स्वामित्व और रजिस्ट्रेशन के बीच असमानता बना रखी है। कोर्ट ने बिहार रजिस्ट्रेशन रूल्स, 2008 का नियम 19 रद्द करते हुए ये टिप्पणियां कीं।

पूर्णिया में शाह बोले-5 साल में 25 चीनी मिल लगाएंगे

लालू-राहुल मां सीता का मंदिर नहीं बनवाएंगे,उन्हें वोट बैंक खिसकने का डर है

पूर्णिया (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने पूर्णिया में कहा, आने में 5 साल में हम बिहार में 25 चीनी मिल लगाएंगे। उसमें से एक पूर्णिया के बनमनखी में लगेगी। हम विकास की बात करते हैं, वो जंगलराज वाले विकास नहीं कर सकते हैं। ये चुनाव दो खेमों में बंटा है। एक ओर बिखरा हुआ महाठगबंधन है। दूसरी ओर पांडव की तरह पूरी मजबूती से एक साथ खड़ा एनडीए है। पहले फेज की वोटिंग में लालू-तेजस्वी का सूपड़ा साफ हो चुका है। 160 से ज्यादा सीटें जीत कर हम नीतिश कुमार के नेतृत्व में सरकार बनाने जा रहे हैं। मैं सीमांचल की धरती से पूछता हूं घुसपैठियों को बाहर करना चाहिए या नहीं। अभी राहुल-तेजस्वी ने घुसपैठिए बचाओ यात्रा निकाली थी। मैं कहना चाहता हूं हम एक-एक घुसपैठिए को बाहर करके रहेंगे। जो घुसपैठियों ने बनाए हैं, उसे हम उखाड़ फेंकेंगे।

जंगलराज को वापस नहीं आने देना है

शाह ने कहा, लालू-राबड़ी ने बिहार में अपहरण, डकैती, फिरौती, लूट और हत्या के उद्योग लगाने का काम किया। जबकि नीतिश जी और मोदी जी की जोड़ी ने बिहार में विकास करने का काम किया। आपको सिंचाई-शिक्षा का विभाग चाहिए या फिरौती का। आरजेडी की सरकार बनी तो अपहरण-लूट-खून मंत्रालय बनेंगे। जंगलराज वालों को वापस मत आने दो। हमें बिहार को जंगलराज से बचाने के लिए वोट देना है। अगर वोट डालने में जरा भी गलती हुई। तीर या कमल छाप से जरा भी इधर-उधर गए तो फिर से जंगलराज आने वाला है।

प्रियंका गांधी ने बीजेपी की तुलना शराबी पति से की

- कटिहार में कहा-शराब पीकर पीटने वाला अचानक साड़ी लाए तो झांसे में मत आना

कटिहार (एजेंसी)। कटिहार में प्रियंका गांधी ने सभा की है। उन्होंने कहा कि, ये लोग आपको 10-10 हजार रुपए दे रहे हैं। पहले दिए थे क्या। चुनाव पास आए हैं तो दे रहे हैं। पुरुष कभी महिलाओं का दर्द नहीं समझ पाएंगे। आप काम से लौटकर आराम करते हो। लेट जाते हो। वो खाना बनाती है। अगले दिन बच्चों के स्कूल जाने की तैयारी करती है। आखिरी में खाना खाती है। सबसे सोने के लिए इंतजाम करती है। अगर आपकी कोई सहेली होती जिसका पति रोज उसे डांटता, पीटता तो आप क्या कहती। एक दिन साड़ी ले आता तो क्या कहती। यही कहती ना इसकी बातों में मत आना। 10 साल से तुम्हें पीट रहा है। इसके बहकावे में मत आना। ऐसे ही बीजेपी वालों ने सोचा कि चुनाव आ गए हैं 10 हजार दे दो वोट मिल जाएगा। आप समझदार हो इनसे पैसे ले लो। वोट इन्हें मत देना।

माफिया के सीने से बुलडोजर धड़धड़ाकर निकलता है

- योगी बोले-यूपी के बाद ये बिहार की तरफ मुड़ने वाला है
- मोतिहारी में राजद पर साधा निशाना, लालटेन बुझ गई है

गयाजी (एजेंसी)। मोतिहारी में यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनसभा की। उन्होंने कहा, पहले चरण के रुझान बता रहे हैं कि एनडीए की सरकार आ रही है। लालटेन बुझ चुकी है। ये माफिया को संरक्षण देने वाले लोग हैं। यूपी में माफिया के सीने से बुलडोजर धड़धड़ाकर निकलता है। अब ये यूपी से बिहार की ओर मुड़ने वाला है। योगी ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा, ये लोग फिर से लालटेन लेकर आए हैं। ये लालटेन नहीं है, डकैती डालने का एक सर्टिफिकेट था। ये वही लोग हैं जिन लोगों ने लालटेन की धुंधली लाइट में जातीय संघर्ष कराया था। 2005 के पहले इन्होंने चारा हजम किया। अब आपका राशन हजम करने आए हैं।

- **यूपी में माफियाओं को हमने यमराज का टिकट दिया-** यूपी में माफिया की क्या हालत है देखा ही होगा। उत्तर प्रदेश में उसके लिए 2 ही जगह है। एक यमराज के घर जाने का टिकट। दूसरा- उसने जो संपत्ति बनाई है, सरकार के कब्जे में लेकर गरीब के लिए आवास बन रहे हैं। जो राम का है वो ही हमारे काम का है। जो राम का है वो ही हमारे काम का है। ईवीएम खुलेगी तो फिर एक बार एनडीए सरकार बनेगी। आज बिहार में क्या नहीं है। मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज सब कुछ बिहार में है। यह एक शुरुआत है। पिछले 20 साल आरजेडी के पापों और गड्ढों को भरने में लगाए।

बिहार की जनता ठगी के मायाजाल में नहीं फंसेगी

सीएम योगी ने जनता से सवाल किया कि कौन थे वे लोग, जिन्होंने बिहार के नौजवानों के सामने पहचान का संकट खड़ा किया। जिस बिहार ने देश को बुद्ध, महावीर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण और कर्पूरी ठाकुर दिए। उस बिहार को आरजेडी और कांग्रेस ने भ्रष्टाचार और अराजकता में झोंक दिया था। बिहार के नौजवानों ने अपनी मेधा से दुनिया में नाम कमाया, लेकिन कांग्रेस-राजद ने उसी बिहार की पहचान धूमिल की। अब बिहार की जनता ठगी के मायाजाल में नहीं फंसेगी। योगी ने कहा, आरजेडी और कांग्रेस ने किसानों को लूटा। विकास का पैसा अपने परिवार के विकास में लगा दिया। उनके राज में सब चौपट था। नक्सलवाद फैलता गया। माफिया राज फैलता गया। सत्ता के समानांतर माफिया की सरकार चलने लगी। जिस बिहार ने देश को बनाया। इन लोगों ने उस बिहार के लोगों के सामने पहचान का संकट पैदा किया। किसानों को खुदकुशी करने पर मजबूर किया। बहन और बेटियों की इज्जत से खिलवाड़ किया। व्यापारी पलायन करने लगा। पूरा विकास बाधित कर दिया।

शिशुकुंज स्कूल की केमिस्ट्री लैब में हादसा, 5 बच्चों और लैब असिस्टेंट पर एसिड गिरा

फ्लास्क टूटने से बच्चों और टीचर पर कैमिकल गिरा, जांच के लिए पुलिस आई

इंदौर। कनाड़िया स्थित शिशुकुंज स्कूल में शुक्रवार दोपहर विज्ञान प्रयोग के दौरान हादसा हो गया। सातवीं कक्षा के छात्र केमिस्ट्री लैब में हाइड्रोक्लोरिक एसिड और जिंक की प्रतिक्रिया का प्रयोग देख रहे थे, तभी कोनिकल फ्लास्क अचानक फट गया। विस्फोट के कारण फ्लास्क से एसिड के छींटे उड़कर पास खड़े 5 बच्चों और लैब असिस्टेंट पर जा गिरे। स्कूल प्रशासन ने उन्हें तुरंत प्राथमिक उपचार दे दिया। किसी भी बच्चे को गंभीर चोट नहीं आई है। सोशल मीडिया पर वायरल सूचना के बाद पुलिस अफसर भी जांच के लिए स्कूल पहुंचे। कनाड़िया पुलिस के मुताबिक उन्हें सूचना मिली थी कि शिशुकुंज स्कूल लैब में एक हादसा हुआ है। जिसमें कुछ बच्चे और मौके पर मौजूद टीचर घायल हुए है। सूचना के बाद यहां पर टीआई सहर्ष यादव और उनके साथ पुलिसकर्मी पहुंचे। टीम स्कूल प्रबंधक और वहां मौजूद बच्चों से घटना की पूरी जानकारी ली। कलेक्टर शिवम वर्मा के निर्देश पर शुक्रवार देर शाम एसडीएम ओमनारायण बड़कुल और तहसीलदार शिशुकुंज स्कूल की

प्रयोगशाला का निरीक्षण करने पहुंचे। घटना के बाद स्कूल प्रबंधन की ओर से प्रिंसिपल डॉ ललिता सिंह ने अभिभावकों को एक पत्र जारी किया। उसमें लिखा कि कक्षा सातवीं के छात्रों को रसायन विज्ञान का एक प्रयोग दिखाते समय, 5 मिलीलीटर हाइड्रोक्लोराइड एसिड का फ्लास्क टूट गया और उसकी कुछ बूंदें और फ्लास्क के छोटे-छोटे टुकड़े शिक्षक और 4-5 छात्रों पर गिर गई। सभी छात्रों को तुरंत एक त्वचा विशेषज्ञ के परामर्श से प्राथमिक उपचार दिया गया। संबंधित छात्रों के अभिभावकों को स्कूल प्रधानाचार्यों द्वारा तुरंत सूचित कर दिया गया। सभी छात्र ठीक हैं, उन्होंने स्कूल में दोपहर का भोजन भी किया और हमेशा की तरह स्कूल बस से घर के लिए रवाना हुए। थाना प्रभारी सहर्ष यादव ने बताया कि घटना में किसी की गंभीर चोट नहीं आई और अब तक किसी अभिभावक की ओर से शिकायत दर्ज नहीं हुई है। शिकायत मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। यह हादसा लैब सुरक्षा प्रोटोकॉल और रासायनिक सामग्री के रख-रखाव को लेकर स्कूल प्रशासन की लापरवाही का संकेत देता है। प्रारंभिक जांच में संभावना जताई जा रही है कि या तो फ्लास्क में दरार थी या केमिकल की गुणवत्ता में गड़बड़ी के कारण यह विस्फोट हुआ।

गनीमत यह रही कि सभी बच्चे सुरक्षित हैं। स्कूल प्रिंसिपल ललिता सिंह ने कहा, 7वीं क्लास का साइंस पीरियड था। सभी बच्चे लैब में थे। एक एक्सपेरिमेंट किया जा रहा था। कोनिकल फ्लास्क किसी कारण से टूट गया। हो सकता है कई बार यूज करने या पुराना होने के चलता ऐसा हुआ होगा। सभी बच्चों के परिवार को सूचना दे दी गई थी। कोई बड़ा हादसा नहीं था। सभी सुरक्षित हैं।

इंदौर प्रदेश का दूसरा ठंडा शहर रात का पारा 10 डिग्री तक आया

पहाड़ों में बर्फबारी का असर मैदान में, नवंबर ठंडा रहेगा

इंदौर। नवंबर की शुरुआत के साथ ही सर्दी की जोरदार हो गई। गुरुवार रात को इंदौर का न्यूनतम तापमान घटकर 10.2 डिग्री के स्तर पर आ गया। यह औसत से 5 डिग्री कम रहा। शुक्रवार को भी दोपहर तक हवा में ठंडेपन का अहसास होता रहा। अधिकतम तापमान 28.1 डिग्री दर्ज किया गया। दिन का पारा औसत से 5 डिग्री कम होता तो शुक्रवार इस सीजन का पहला कोल्ड डे घोषित हो जाता। नवंबर के पहले सप्ताह में ही ठंड के तेवर जिस तरह से बने हुए हैं, उस हिसाब से इस महीने कोल्ड डे की स्थिति बन सकती है। पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी के बाद उत्तरी हवा वहां से ठंडक ला रही है। सीजन में पहली बार सुबह 10 बजे तक भी ठंड महसूस हो रही थी। अच्छी बात यह है कि अगले 8-10 दिन भी ठंड किसी तरह से प्रभावित नहीं होने वाली। मौसम पूरी तरह साफ रहेगा।

प्रदेश में इंदौर दूसरा सबसे ठंडा शहर रहा। राजगढ़ में न्यूनतम तापमान 9 डिग्री दर्ज किया गया, जो देश के 10वें सबसे ठंडे शहर के रूप में रिकॉर्ड हुआ। राजगढ़ सबसे ठंडा रहा, जहां एक रात में ही 2 डिग्री की गिरावट दर्ज हुई। ग्वालियर में 11.3 डिग्री, जबलपुर में 14.6 डिग्री, उज्जैन में 13 डिग्री - ये आंकड़े बताते हैं कि सर्दी का असर पूरे राज्य पर छा गया है। दतिया में 11.1 डिग्री, गुना में 12.2 डिग्री, धार में 12.4, रीवा में 12.5 डिग्री, श्योपुर-नौगांव में 13 डिग्री, बैतूल में 13.2 डिग्री, उमरिया में 13.8

डिग्री, टीकमगढ़ में 14 डिग्री, सागर में 14.2 डिग्री, रतलाम में 14.5 डिग्री, सतना में 14.9 डिग्री, छिंदवाड़ा-दमोह में 15 डिग्री सेल्सियस। ये आंकड़े मध्य प्रदेश मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार हैं। उत्तरी हिमालयी क्षेत्रों में बर्फबारी का असर अब मैदानी इलाकों तक पहुंच गया है, जिससे ठंडी हवाओं ने तापमान को लुढ़का दिया।

यह गिरावट किसानों, यात्रियों और आम नागरिकों के लिए चुनौती है। लगातार दो दिनों तक न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से कम हुआ तो कोल्ड डे दर्ज हो सकता है, जो नहीं हुआ। अधिकतम तापमान भी सामान्य से 4.5 से लेकर 6.4 डिग्री कम हो, यह सामान्य से सिर्फ 3 डिग्री कम रहा। दो नजदीकी जिलों में ठंड की ऐसी स्थिति नहीं थी।

'हेलमेट पहनें, सुरक्षित रहें' अभियान शुरू, फूल देकर सम्मानित भी किया

जिन वाहन चालकों के पास सारे दस्तावेज मिले उन्हें हेलमेट भेंट

इंदौर। सड़क सुरक्षा के प्रति आमजन को जागरूक करने के उद्देश्य से पुलिस द्वारा लगातार अभियान चलाया जा रहा है। शुक्रवार को पलासिया चौराहे पर विशेष हेलमेट जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। इस अभियान में ट्रैफिक पुलिस और शिखर इंस्टीट्यूट ने मिलकर लोगों को 'हेलमेट पहनें, सुरक्षित रहें' का संदेश दिया। कार्यक्रम में डीसीपी आनंद कलादगी, एडिशनल डीसीपी संतोष कुमार कौल, सहायक पुलिस आयुक्त हिंदू सिंह मुवेल और सुप्रिया चौधरी उपस्थित रहे। अभियान के दौरान जिन वाहन चालकों के पास सारे दस्तावेज (रजिस्ट्रेशन, लाइसेंस आदि) थे, उन्हें हेलमेट भेंट किए गए। जो चालक नियमों का पालन करते हुए हेलमेट लगाए हुए थे, उन्हें ट्रैफिक अधिकारियों द्वारा फूल देकर सम्मानित किया गया। शिखर इंस्टीट्यूट के विद्यार्थियों ने ट्रैफिक प्रहरी बनकर सड़क सुरक्षा से जुड़ी तख्तियां लेकर लोगों को जागरूक किया। वाहन चालकों ने भी दूसरों से हमेशा हेलमेट पहनकर वाहन चलाने की अपील की। इस पहल के माध्यम से पुलिस ने संदेश दिया कि यातायात नियमों का पालन केवल कानून नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

सड़क हादसे में घायल को 66 लाख मुआवजा

इंदौर। खजराना क्षेत्र में वर्ष 2021 में हुए सड़क हादसे के मामले में जिला न्यायालय ने गंभीर रूप से घायल छात्र आयुष मोदी को 66 लाख रुपए (ब्याज सहित) का मुआवजा देने के आदेश दिए हैं। अदालत ने यह राशि दुर्घटना करने वाली कार की बीमा कंपनी से दिलाने का निर्देश दिया है। घटना 4 मार्च 2021 की है। आयुष मोदी अपने दोस्तों के साथ दोपहिया वाहन से खजराना चौराहे के पास रिंगरोड पर जा रहे थे, तभी पीछे से आ रही कार क्रमांक एमपी-09-सीयू-9212 ने उनके वाहन को जोरदार टक्कर मार दी। इस भीषण टक्कर में आयुष को सिर और शरीर के कई हिस्सों में गंभीर चोटें आईं, जिसके चलते उनके दोनों हाथ और कमर के नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। डॉक्टरों ने उन्हें स्थायी रूप से लोकोमोटर विकलांग घोषित किया। आयुष के पिता मनोहर ने उनके विधिक संरक्षक के रूप में अधिवक्ता अजय बाजपेयी के माध्यम से बीमा कंपनी के विरुद्ध जिला न्यायालय में क्षतिपूर्ति का दावा दायर किया था। उन्होंने कोर्ट को बताया कि आयुष एमसीए में प्रवेश की तैयारी कर रहे थे। दुर्घटना के बाद वह व्हीलचेयर और अटेंडरों की मदद पर निर्भर हैं। वकील के तर्कों से सहमत होते हुए कोर्ट ने बीमा कंपनी को 55,19,217 की क्षतिपूर्ति राशि अदा करने के आदेश दिए।

बेरोजगार युवक ने फांसी लगाई

इंदौर। दो माह से काम नहीं मिलने के कारण युवक डिप्रेशन में चल रहा था। बार-बार परिजन उस पर नौकरी का दबाव बनाते थे। इसके चलते वह डिप्रेशन में चला गया था। कहीं जाने के दौरान बाइक से गिर गया था, इससे उसके हाथ में दर्द हो रहा था। परेशान होकर उसने फांसी लगा ली। घटना के समय पत्नी काम पर गई हुई थी तो बेटे ने पिता को फंदे पर लटका देखा। इसके बाद उसने आसपास के लोगों को सूचना दी। बेटा अस्पताल लेकर गया, वहां डॉक्टरों ने युवक को मृत घोषित कर दिया। आजाद नगर पुलिस ने रामदीन (35) पिता शिवराम मालवीय निवासी मूसाखेडी की मौत के मामले में मर्ग कायम किया है। रामदीन की बहन दुर्गा ने बताया कि वह फेरी का काम करते थे और पिछले दो माह से काम नहीं कर पा रहे थे। हादसे के कारण उन्हें चलने-फिरने और हाथ में परेशानी हो रही थी। गुरुवार को रामदीन घर पर थे। मैं फैक्ट्री में काम पर गई हुई थी। इसी दौरान उन्होंने फंदा लगा लिया। बेटा खेलते समय जब घर आया तो उसने पिता को फंदे पर लटका देखा। परिवार के लोगों ने बताया कि रामदीन का परिवार खंडवा के पास सुखवीखाल गांव का रहने वाला है। रामदीन कुछ साल पहले काम की तलाश में इंदौर आ गए थे।

मेडिकल कर्मचारी की अचानक अटैक से मौत

इंदौर। दवा बाजार इलाके में गुरुवार दोपहर मेडिकल स्टोर कर्मचारी की अचानक मौत हो गई। 32 वर्षीय धर्मेंद्र कुमायूं, जो लोहा मंडी इलाके में रहते थे, अपनी ड्यूटी पर जा रहे थे तभी रास्ते में अचानक बाइक से गिर पड़े। आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत उन्हें पास के मेडिकल स्टोर और डॉक्टरों तक पहुंचाया, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। जांच के बाद डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। संयोगितागंज पुलिस ने बताया कि धर्मेंद्र पिछले तीन साल से दवा बाजार स्थित हीरा मेडिकल में काम कर रहे थे। हादसे की जानकारी मिलने के बाद उनके सहकर्मी और परिजन मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम कराया और जांच शुरू की है। आसपास के सीसीटीवी फुटेज में धर्मेंद्र खुद-ब-खुद गिरते हुए दिखाई दे रहे हैं। प्रारंभिक जांच में यह मामला हार्ट अटैक से मौत का लग रहा है। हालांकि पुलिस ने कहा कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पाएगी। धर्मेंद्र अपने पीछे पत्नी और दो छोटे बच्चों को छोड़ गए हैं। उनके माता-पिता और भाई तेजाजी नगर में रहते हैं। दवा बाजार एसोसिएशन ने पोस्टमॉर्टम की प्रक्रिया पूरी कराने में परिवार की मदद की और शाम को शव परिजनों को सौंप दिया गया।

अंतहीन बैठकों में उलझ गया इंदौर का मेट्रो प्रोजेक्ट, मर्जी की सलाह से दिक्कत ज्यादा

पांच साल देरी से लागत 61 प्रतिशत बढ़कर 7500 से 12 हजार करोड़ तक पहुंची

इंदौर। यहां का मेट्रो प्रोजेक्ट अब शहर के विकास की नहीं, बल्कि अंतहीन वादों और निर्णय विहीन बैठकों की कहानी बन गया। तकनीकी फैसलों पर नेताओं की दखलंदाजी भी मेट्रो प्रोजेक्ट में देरी का कारण है। कभी बंगाली चौराहा से अंडरग्राउंड करने की बात होती है, कभी इसे खजराना से शुरू करने का प्रस्ताव रखा जाता है। वही पुरानी कहानी कि निर्णय शासन करेगा, फिर केंद्र से मंजूरी लेनी होगी। अभी तक की बैठकों के फैसलों का ठोस परिणाम अभी तक नहीं दिखा और अब नए प्रस्ताव से लागत 900 करोड़ बढ़ने से अतिरिक्त राशि का बोझ। इंदौर मेट्रो तय समय सीमा से पांच साल पीछे चल रहा है। शुरुआत में इसकी लागत 7500 करोड़ तय की गई थी, जो अब बढ़कर करीब 12 हजार करोड़ तक पहुंच गई है। मेट्रो को लेकर नेताओं के बयान खुद अपने विरोधाभासों में उलझे हैं। कभी मल्हारगंज स्टेशन की लोकेशन बदलने की बात होती है, फिर कहा जाता है कि नई तकनीक से एक गमला भी नहीं हटाना पड़ेगा। विडंबना है कि दिल्ली जैसे घने इलाकों चांदनी चौक और चावड़ी बाजार में मेट्रो बिना शहर की आत्मा को छेड़े दौड़ सकती है, पर इंदौर में हर नया कदम खुद अपने पुराने कदमों पर ठोकर खा जाता है।

अधर में लटका फैसला

सवाल सिर्फ तकनीक या डिजाइन का नहीं, राजनीतिक इच्छाशक्ति का है। हर बार नई बैठक, नई घोषणा, और फिर वही अधर में लटका फैसला। इंदौर शहर भारत की स्वच्छता राजधानी कहलाता है, लेकिन मेट्रो प्रोजेक्ट के मामले में 'अनिर्णय की राजधानी' बनने की ओर अग्रसर है। यहां के नेता खुद स्वीकारते हैं कि प्रोजेक्ट लेट हुआ और आगे भी होगा तो कोई चिंता नहीं, पर अब जनता चिंतित है। क्योंकि, जनता समय पर विकास चाहती है, बयानबाजी नहीं। वह राहत चाहती है, परेशानी नहीं। अब वक्त आ गया है कि इंदौर मेट्रो को बैठकों से नहीं, फैसलों से आगे बढ़ाया जाए। क्योंकि, जब तक शासन और प्रशासन अपने रुख को स्पष्ट नहीं करेंगे, तब तक मेट्रो केवल नक्शों में ही चलेगी धरातल पर नहीं उतरेगी। साल 2015 में बनी डीपीआर के बाद से प्रोजेक्ट की लागत बढ़ती रही। जबकि, गति लगातार सुस्त रही। अभी तक 4409 करोड़ रुपए की फंडिंग मिली है, जिसमें से 4228 करोड़ खर्च हो गए। प्रोजेक्ट को केंद्र सरकार, राज्य सरकार, न्यू डेवलपमेंट बैंक और एशियन डेवलपमेंट बैंक मिलकर फंड कर रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर फैसला जल्द नहीं हुआ तो मेट्रो की लागत दोगुनी हो सकती है।

17.5 किमी एलिवेटेड कॉरिडोर अधूरा- इंदौर में मेट्रो का काम 2018-19 में शुरू हुआ था। 2021 में रफ्तार मिली। लेकिन, कोविड से पहले एजेंसी-कंसल्टेंट विवाद और सरकार बदलने से प्रोजेक्ट अटक गया। 31.32 किमी में से अब तक 17.5 किमी एलिवेटेड कॉरिडोर अधूरा है। तय लक्ष्य 2025-26 था, अब 2027 तक पूरा होने की उम्मीद भी नहीं है।

डेढ़ साल काम ही नहीं हुआ - रोबोट चौराहा से पलासिया चौराहा तक 5.50 किमी पर एलिवेटेड कॉरिडोर का टेंडर 550 करोड़ में हुआ था। अलाइमेंट विवाद के कारण डेढ़ साल से काम ठप पड़ा था। खजराना के बाद से ही इसे अंडरग्राउंड करने की तैयारी है। ठेका निरस्त करने पर भी मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन को मुआवजा देना होगा। अब तक इंदौर मेट्रो पर 4409 करोड़ और भोपाल मेट्रो पर करीब 3950 करोड़ खर्च हो चुके हैं।

दूसरे-तीसरे चरण के रूट तय- दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन ने उज्जैन-इंदौर (लगभग 40 किमी) और इंदौर-पीथमपुर (44 किमी) के लिए रिपोर्ट तैयार की है। 25 जुलाई 2024 को डीएमआरसी को डीपीआर तैयार करने का आदेश मिल चुका है। रिपोर्ट जुलाई 2025 तक आने की उम्मीद है। मेट्रो के दूसरे व तीसरे चरण की रूट लाइन भी तय हो गई है।

सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए 'जागरूकता रथ'

पुलिस कमिश्नर ने हरी झंडी दिखाकर रथ को रवाना किया

इंदौर। सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति आमजन को जागरूक करने के उद्देश्य से पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह ने शुक्रवार को 'यातायात जागरूकता रथ' का शुभारंभ किया। यह विशेष रथ शहर के प्रमुख चौराहों, बाजार क्षेत्रों और भीड़भाड़ वाले मार्गों पर भ्रमण कर नागरिकों को यातायात नियमों के पालन के लिए प्रेरित करेगा। पुलिस आयुक्त ने रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रथ में लगी डिजिटल स्क्रीन और ऑडियो-विजुअल सिस्टम के माध्यम से सड़क सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण संदेश, लघु फिल्में और वीडियो क्लिप प्रदर्शित किए जाएंगे, जिससे नागरिकों को सुरक्षित यातायात के प्रति जागरूक किया जा सके। इस अवसर पर पुलिस आयुक्त ने कहा कि हर नागरिक को यातायात नियमों का पालन करना चाहिए।

अपनी और दूसरों की सुरक्षा हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। जागरूकता रथ के माध्यम से शहरवासियों में सड़क सुरक्षा के प्रति सजगता बढ़ेगी। सड़क सुरक्षा के प्रति जनभागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए

पुलिस द्वारा ट्रैफिक प्रहरी अभियान भी संचालित किया जा रहा है।

अब तक 1100 से अधिक जिम्मेदार नागरिक इस अभियान से जुड़कर यातायात व्यवस्था सुधारने में पुलिस का सहयोग कर रहे हैं। यह अभियान इंदौर पुलिस की उस पहल का हिस्सा है जिसके तहत शहर को सुरक्षित यातायात का उदाहरण बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

मल्हारगंज में मेट्रो स्टेशन का विरोध, कहा कि बगीचा और मकान न तोड़ें

रहवासियों और दुकानदारों ने मंच लगाकर प्रदर्शन किया

इंदौर। मल्हारगंज इलाके में मेट्रो स्टेशन बनाने का लोग विरोध कर रहे। छोटा गणपति मंदिर के सामने मेट्रो स्टेशन के लिए सॉयल टेस्टिंग मशीन आ गई है। अब इससे मिट्टी परीक्षण शुरू होगा। रहवासियों में इसे लेकर नाराजगी है। उन्होंने शनिवार को टोरी कॉर्नर के पास एकजुट होकर विरोध किया। मल्हारगंज क्षेत्र में मेट्रो के स्टेशन का विरोध सोमवार से ही शुरू हो गया था। स्टेशन के लिए क्षेत्र के 40 मकान तोड़े जाना है। इसके अलावा एक उद्यान भी उपयोग में लिया जाएगा। इसे लेकर रहवासी नाराज है। मल्हारगंज स्थित छोटा गणपति मंदिर के सामने बड़ी संख्या में रहवासियों और दुकानदारों ने मंच लगाकर विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शन कर रहे लोगों का कहना है कि मेट्रो स्टेशन यहां पर अधिकारियों की मनमानी के चलते बनाया जा रहा है। इससे स्थानीय लोगों को परेशानी होगी, बच्चों को खेलने,

युवा बुजुर्गों को टहलने के लिए बगीचे खत्म हो जाएगा।

विरोध प्रदर्शन में मनोज श्रीवास्तव, महेश राठी, शेखर गिरी, अंकित दुबे, डॉ सुनीता हरलालका, हिमांशु शास्त्री, रीना नीमा,स्वाति जोशी, राम सुदालिया आदि रहवासी और दुकानदार मंच लगाकर मेट्रो स्टेशन का विरोध कर रहे हैं। जबकि, नाथ मंदिर से एयरपोर्ट तक अंडरग्राउंड मेट्रो बनाई जा रही है। इसके टेंडर जारी हो चुके है। काम अभी तक शुरू नहीं हो पाया। इंदौर में बंगाली कॉलोनी क्षेत्र से मेट्रो को अंडरग्राउंड करने की मांग भी रहवासी उठा रहे है। उनका कहना है कि पलासिया पर मेट्रो ट्रैक बनने के बाद वहां भविष्य में ब्रिज नहीं बन पाएगा।

असामाजिक तत्वों पर पैनी निगरानी रख रही पुलिस, ड्रोन पेट्रोलिंग बढ़ी

रियल-टाइम जानकारी से अपराध नियंत्रण और त्वरित कार्रवाई

इंदौर। जोन-2 में पुलिस द्वारा असामाजिक तत्वों पर कड़ी निगरानी और अपराध नियंत्रण के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करना, अपराधों पर अंकुश लगाना और पुलिस-जनता के बीच विश्वास को और मजबूत बनाना है। जोन के सभी थाना प्रभारियों को निर्देश दिए हैं कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय अपराधियों, संदिग्ध व्यक्तियों और निगरानी बदमाशों पर लगातार नजर रखें। किसी भी आपराधिक गतिविधि की सूचना मिलने पर तत्काल कार्रवाई की जाए। सभी थानों को नियमित ड्रोन पेट्रोलिंग के निर्देश दिए हैं। भीड़भाड़ वाले बाजारों, सार्वजनिक स्थलों और संवेदनशील इलाकों में पुलिस बल की अतिरिक्त तैनाती की गई है। ड्रोन पेट्रोलिंग से पुलिस को रियल-टाइम जानकारी मिल रही है, जिससे अपराध नियंत्रण और त्वरित कार्रवाई में गति आई है।

यहां रखी निगरानी- थाना लसूडिया के स्कीम नं. 78, बावड़ी हनुमान मंदिर, द हब क्षेत्र व ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर, थाना खजराना के टास्कस चौराहा, स्कीम नं. 94, धीरज नगर व रोबोट चौराहा, थाना विजय नगर में अपोलो अस्पताल से भंडारी अस्पताल तक, सत्यसाई चौराहा, थाना एमआईजी में नादिया नगर, संजय गांधी नगर व स्वर्ण बाग कॉलोनी, थाना परदेशीपुरा में टापू नगर, कुलकर्णी का भट्टा में निगरानी रखी गई। जनसहभागिता को बढ़ावा देने के लिए जोन-2 के सभी थाना क्षेत्रों में मोहल्ला मीटिंग्स और जनसंवाद कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन बैठकों में नागरिकों से सुझाव लेकर पुलिस-जनता के बीच संवाद और भरोसे का रिश्ता मजबूत किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों में लोगों को नशे के दुष्परिणाम, अपराध नियंत्रण की जिम्मेदारी और सुरक्षित समाज निर्माण में उनकी भूमिका के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

कमरे में घुसकर पुराने परिचित ने छेड़छाड़ की

इंदौर। विजयनगर थाना क्षेत्र में युवती से छेड़छाड़ और मारपीट करने के मामले में पुलिस ने आरोपी कृष्णप्रताप सिंह उर्फ अभिषेक चौहान के खिलाफ गुरुवार रात छेड़छाड़ और मारपीट की धाराओं में एफआईआर की गई। पुलिस को विजयनगर में रहने वाली पीड़िता ने बताया कि आरोपी रात करीब साढ़े नौ बजे उसके कमरे के बाहर आया और उसे आवाज देकर बुलाया। इस दौरान उसने अभद्र हरकतें की और छेड़छाड़ करने लगा। जब पीड़िता ने विरोध किया तो आरोपी ने थप्पड़ मारे। वह आरोपी को करीब 6 माह से जानती है। पुलिस के मुताबिक पीड़िता और आरोपी की पहचान फाइनेंस कंपनी में नौकरी के दौरान हुई थी। युवती ने वहां करीब 15 दिन ही काम किया, जिसके बाद उसने नौकरी छोड़ दी। इसी दौरान अभिषेक उससे दूसरी नौकरी दिलाने के नाम पर संपर्क में बना रहा। युवती का कहना है कि आरोपी ने उससे कुछ रुपए उधार लिए थे, जो बाद में लौटा दिए। इन्हीं पैसों की बात करने के बहाने वह उसके कमरे पर पहुंचा था। पुलिस जांच कर रही है।

व्यंग्य

मुकेश राठौर
लेखक व्यंग्यकार हैं।

मतों की भरपूर फसल लेने हेतु उपयोगी सलाह

जबसे राजनीति फायदे का सौदा बनीं देश कृषि प्रधान से राजनीति प्रधान होता दिखाई दे रहा है। अब गांव-गांव,गली-गली,घर-घर राजनीति होने लगी है। अनुमानित देश की पचहत्तर प्रतिशत आबादी राजनीति करती है,जो खेती करने वालों से लगभग पंद्रह फीसदी अधिक कही जा सकती है। राजनीति में मुख्य रूप से मतों की फ़सल पैदा की जाती है। खरीफ,रबी,जायद नहीं बल्कि ऐसी फसल जो बारहों मास होती है।यह फसल ग्राम में उगाई जाए चाहे नगर,महानगर या फिर यूनिवर्सिटी कैंपस में लागत से कई गुना ज्यादा पैदा होती है। इधर बगैर भावान्तर फसल का समर्थन मूल्य न भी मिले तो भी समर्थन के बदले भरपूर मूल्य मिल ही जाता है। इस खेती में न सूखे का भय है,न पाला पड़ने का डर। मीरा के 'खर्च न खूटे,चोर न लूटे' टाइप समझ लीजिए। मतों की फसल के अलावा राजनीति में सहायक उद्यमों की बात करें तो इसमें ठेकेदारी, कमीशन, दबंगई आदि से भी अच्छी-खासी आय अर्जित की जा सकती है। प्रिय होने वाले नेता भाइयों आज की वार्ता में आइए अधिक उत्पादन हेतु आधारिक मत फसल पद्धतियों पर चर्चा करते हैं।

1) **जमीन की तैयारी:** मत फसल की तैयारी का पहला काम है जमीन तैयार करना। यदि आपके परिवार में पहले से राजनीति होती आई है तो जमीन तैयार मिलेगी मतलब राजा का बेटा राजा अन्यथा आपको जमीन तैयार करनी पड़ेगी। यह बहुत कठिन कार्य है लेकिन लगे रहे तो होते-होते हो जाता है। इस हेतु आप यह करे कि शीघ्रातिशीघ्र पढ़ाई-लिखाई छोड़ दें और घर-परिवार की जगह आस-पड़ोस में घटित सुख-दुख के कामों में बढ़-चढ़कर भाग लेना शुरू करें। अपने राजनैतिक आराध्य के साथ एक बढ़िया सा फोटो खिंचवा लें,जिसे अपनी वाट्सअप डीपी से लेकर फ्लैक्स,बैनर में इस्तेमाल करें। समय सहूलियत से अपना एक मित्रमंडल बना लें। ताज़ा घटनाओं पर बगुला ध्यान और धारदार जुबान रखें। मियां-बीवी बीच हुई कहासुनी भी सुनने में आए तो फटदेनी डोनाल्ड ट्रंप बन समझौता करवाने पहुंच जाए। कोर्ट-कचहरी के कामों में आगे रहकर वादी से रपट लिखवाए तो प्रतिवादी की जमानत भी आप ही करवाए। माने चोर से चोरी करने की सलाह और साहूकार को जागते रहने की नसीहत। इससे यह होगा कि दोनों पक्षों से आपको धन्यवाद मिलेगा न भी मिला तो उनकी तरफ जमा रहेगा। ऐसे छोटे-छोटे समसामयिक कार्यों से आपकी राजनीति की जमीन उर्वरा होती चली जाएगी।

2) **बुआई:** जब राजनीति की जमीन तैयार हो जाए तो समय-समय से समाज में जात,धरम,भाषा-बोली,ऊंच-नीच आदि नफरत के बीजों की बुआई कर दें। याद रहे एक साथ बुआई नहीं करना है। ऐसा करने पर आपकी बोवनी बिगड़ सकती है। एक बार बोवनी बिगड़ जाए तो दोबारा में पहले उगे बीज ही खरपतवार नज़र आने लगते हैं। त्योहारी सीजन बुआई के लिए अनुकूल होगा। आप सोच रहे होंगे कि जात-पात,भाषा-बोली,ऊंच-नीच के बीजों से मतों की फ़सल कैसे तैयार होंगी? तो आप गलत सोच रहे हैं 'मतफल' इन्हीं पर लगते हैं। एक बात और इनकी एक साथ बुआई भले संभव नहीं कटाई बराबर संभव है। मत बीजों को छिड़कवा विधि के अलावा आप चाहे तो 'सर' से नजर बचाकर अन्य कहीं से मत पादप लाकर भी अपने यहां रोपित कर सकते हैं। अब बात आती है बीज चयन की तो यह प्रयोग करें कि जात भाई से जात भाई को लड़ा कर देखें जो हल्के होगें वे सामने आ जाएंगे बस ये हल्के ही राजनीति में उत्तम बीज होंगे। इन बीजों को इथेनॉल से उपचारित कर सूखा लें।

3) **पोषण:** मतों की फसल से अच्छी पैदावार हेतु आप कोई न कोई आयोजन आदि करते रहे जिसमें भंडारे की व्यवस्था हों। साथ-साथ खाने से प्रेम ही नहीं बढ़ता भीड़ भी बढ़ती है और भीड़ बढ़ती है तो मत भी। धार्मिक आयोजन मतों की फसल के लिए जैविक खाद का काम करते हैं। इससे ये फायदा होता है कि वोटों में बढ़वार हो न हों खोटे करम में घटवार जरूर हो जाती है। अब भी यदि फसल में अच्छी बढ़वार न दिखाई दें तो भड़काऊ बयान,सोशल मीडिया पोस्ट आदि का भी उपयोग कर सकते हैं। इससे पर्यावरण दूषित जरूर होगा लेकिन ये अधिक मतोत्पादन का कारण बनते हैं।

4) **सिंचाई :** अब आपकी इस फसल को सिंचाई की आवश्यकता होगी। आपकी फसल हमेशा लहलहाती रहे इस हेतु आप पाला बदल-बदल कर सिंचाई करते रहे इससे फसल भी और आप भी हरे-भरे रहेंगे। समय सहूलियत से समाज में तरल मुद्रा और पेय पदार्थ बहाते रहे। याद रहे सिंचाई हेतु आपको ज्यादा पानी देने की आवश्यकता नहीं बल्कि मतों से पल्लवित-पुष्पित फसल को बूंद-बूंद विधि से या ठंडी हवा चलाकर भी हरा और भरा रखा जा सकता है। औरों का पानी उतार,पानी चढ़ाते रहें और हवा बनाकर रखें।

5) **सुरक्षा:** अन्य फसलों की तरह मतों की फसल की भी सुरक्षा करनी होती है। खरपतवार किसी भी फसल के उत्पादन को प्रभावित करते हैं। समय रहते इनकी निराई जरूरी है वरना फसल प्रभावित होगी। खरपतवार माने विरोधी। घोषित विरोधी से इतर पार्टी में ही कोई विभीषण टाइप विरोधी जान पड़े तो हाइकमान से उसकी झूठी शिकायत कर उसे पहले तो पार्टी से निकलवाए। कोई वोट कटवा अधिकारी या कर्मचारी जान पड़े तो उसके सीरियल ट्रांसफर करवाए ताकि दौड़-दौड़ उसकी स्वयं की कुल जमा दो टांगें इतनी दुख आए कि वह आपके कामों में टांग अड़ाना बंद कर सिरीप अपनी टांगें सहलाता रहे। समाज में कुछ कागभगोड़े बैठा कर रखें जो वोट चोरों की निगरानी करें।

6) **कटाई:** इस तरह जब आपकी फसल पककर तैयार हो जाए तो उसकी कटाई कर लें। आजकल मत कटाई से पहले मत पादप गणना का कार्य किया जाने लगा है, इससे यह फायदा है कि कटाई पूर्व ही उत्पादन का अंदाजा लगाया जा सकता है तो अवांछित पौधों को हंसिया बताने से भी मुक्ति मिल जाती है। चलिए बात करते हैं कटाई की तो भाइयों और बहनों मत फसल की कटाई प्रायः घोषणाओं से की जाती है। कहीं-कहीं दारू और नोटों से भी फसल कटाई की जाती है। इस प्रकार की मत कटाई प्रायः रातों में की जाती है। पारिस्थितिक तंत्र से सेटिंग हो तो बेखटके दिन में भी ऐसी आप पूछेंगे दारू और नोटों से फसल कटाई? दरअसल दारू पौधों की जड़ों को जमीन छुड़ाने में मददगार होती है और नए-नए नोट तलवार की धार से तेज होते हैं जिनसे कठोर और चामट तनों को भी काटा जा सकता है। कटाई बाद आप अपनी फसल को लोकतंत्र की मंडी में बेच दें या फिर सुरक्षित भंडारण कर लें। हमारे यहां मत कटाई को महात्योहार के रूप में मनाया जाता है। ऐसा त्योहार जो सारे त्योहारों पर भारी है इसमें जितना खर्चा होता है और किसी त्योहार पर नहीं।

7) **भंडारण:** भंडारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। भंडारण दो कारणों से किया जाता है। यदि मंडी चालू है तब तो मत फसल केश कर लीं अन्यथा की स्थिति में इसका भंडारण जरूरी हो जाता है। दूसरा फसल हेतु बीजों का संग्रह। एन बुआई के वक्त बीज खरीदना अव्यावहारिक माना जाता है यूं समझिए चुनाव के समय आचार संहिता उल्लंघन जैसा। अतःआप पहले ही बीज धारकों को किसी बहाने इतना पैसा दे दें कि समय आने पर आपके बीज पक्के रहे। बीज धारक बुजुर्ग,महिला,युवा कोई भी हो सकते हैं। समय पूर्व इन मत बीजों पर किया गया खर्च अधिकतम अंकुरण का कारण बनेगा।

उम्मीद है अगर आप इस तरह से मतों की फसल पैदा करेंगे तो आपको अच्छा-खासा लाभ होगा।

कविता

नीतीश मिश्र

हत्यारा संसद में ही नहीं
हमारे शहर में भी बैठा हुआ हैं
शहर में ही क्यों
हमारे मोहल्ले में हैं
मोहल्ले में ही क्यों
हमारे दफ्तर में हैं
दफ्तर में ही क्यों
हमारे खेमे में हैं
खेमे में ही क्यों
हमारे मित्र के रूप में हैं ।
लेकिन हम इन हत्यारों से नहीं लड़ पाते हैं
इसलिए सरहद पर बैठे हुये
हत्यारे से हम लड़ते हैं
क्योंकि हम बचे रहेंगे।।
जबकि आदमी घोड़ा गाड़ी के साथ
बहुत ही पहले मर चूका होता हैं

हत्यारे केवल चुनाव में
मुर्दो को जीवित रखते हैं
हत्यारे यमराज से भी
कहीं अधिक
खतरनाक होते हैं।

कविता

सहकारिता गीत

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

चलो हम साथ चलें
करें भारत गान
सहकारिता-युग कर सृजित
बनाएं देश महान.

आत्मनिर्भरता भारत बनाना है
अपना वैशिष्ट्य बताना है
सहकार से समृद्धि
आत्मसात करें हम
एकात्म भाव से,
सृजित हो नए-नए प्रतिमान.
जब मिलेगी आर्थिक समृद्धि
खुशहाल भारत हो जाएगा
सहकार से स्वावलंबन होगा
सबके मनोरथ पूर्ण करें हम
एक भारत, श्रेष्ठ भारत रच,
विकसित भारत की ओर करें प्रस्थान
महिलाएं होंगी जब आत्मनिर्भर
सशक्त युवा होंगे, मेहनत कर
सहकारिता नए अध्याय
लिखने का संकल्प करें हम
चलो छेड़ें नए तराने,
रचें सहकारिता के नए-नए कीर्तिमान.
यह है विश्व-विजयी भारत
यह है विश्व-गुरु भारत
सनातन सभ्यता इसकी
यह है अप्रतिम भारत
भारतीय सहकारिता का,
जगत होगा अब पूर्ण सम्मान
चलो हम साथ चलें
करें भारत गान।

लघुकथा

अधिकार

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

'जो अच्छे बच्चे होते हैं वे जल्दी ही उठ जाते हैं।'

दांत में मंजन आंख में अंजन
नित कर नित कर।
नाक में उंगली कान में लकड़ी
मत कर मत कर।'

हरिनाथ मुंशी जी सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपने लिखे सुविचारपरक गीत गाते-गाते दुवार की साफ सफाई करते। सरकारी स्कूल से अवकाश प्राप्त हो गये थे परंतु अपनी चौपाल में टोला मुहल्ला के असहाय गरीब बच्चों को अभी भी निःशुल्क पढ़ाते आ रहे थे। इनका स्वयं का बड़ा परिवार। एकाध बिटिया बहन यहां बनी रहतीं। बिगड़ैल बच्चे इनके सुपुर्द। नाती नतकुर नाना के सख्त अनुशासन में जिंदगी के फलसफे सीखने को भेज दिए जाते।

नब्बे साल की आयु में अपने पीछे तकरीबन तीन लाख जमा पूंजी औ खेत खलिहान छोड़कर मुंशी जी गोलोकवासी हुए। तेरह दिन का क्रिया कलाप और ज्ञान घाट के ज्ञान की ऐसी तैसी। भाई बहन दहलीज के दो तरफा सबको हिस्सा? खैर बात बन गई परंतु मुंशी जी के पाले पोसे पढ़ाये लिखाये नाती बुद्धि तर्क के साथ सभी संतानों के अधिकार से ध्याला पर राजी न हुए। आधिकार, अधिकारों के रक्षक कोर्ट कचहरी। चलती रही प्रक्रिया पंद्रह साल..। खैर फैसला मुनासिब रहा, चारों बेटियों को पच्चास पच्चास हजार का बराबरि हिस्सा।

'बस्स इतना ही भैया... !'

भैया की उम्र सत्तर का आंकड़ा पार कर गई थी। उनके लिए बहन को पहचानना अब संभव न था...।

लघुकथा

कालिख

रामेश्वरम तिवारी

मिस्टर सत्यप्रकाश की कार्य प्रणाली और तेज-तर्रार व्यवहार को देखकर दफ़्तर के कर्मचारियों के बीच यह आम धारणा बन चुकी थी कि वह बेहद ईमानदार और सख्त मिज़ाज के अफ़सर है। न खुद घूस खाते हैं और न ही अधीनस्थों को खाने देते हैं। अगर खुदा-न-ख़ास्ता उनको पता चल जाए कि अमुक कर्मचारी घूसखोर है, तो फिर समझो कि उसकी शामत ही आ गई। उनकी पूरी सर्विस के दौरान जिस जगह पर उनका तबादला होता उसके पहले ही उनकी सख्ती और ईमानदारी की हवा पहुँच जाया करती थी। इसलिए वहाँ पर जितने भी घूसखोर और कामचोर कर्मचारी होते ईमानदारी का ढोंग करने लग जाते थे।

मिस्टर सत्यप्रकाश की प्रसिद्धि से चिढ़कर प्रदेश के मुखिया को उनकी सेवानिवृत्ति के अंतिम पड़ाव में इम्तिहान लेने की झक सवार हुई और उनका तबादला एक ऐसे ज़िले में कर दिया जो घूसख़ोरी के मामले में पूरे प्रदेश में बदनाम था। आम लोगों का कहना था कि वहाँ पर बिना लेन-देन के किसी का कोई काम नहीं होता है। चाहे आप कितनी भी ऊँची पहुँच वाले हों। नीचे से लेकर ऊपर की टेबुल तक सभी भ्रष्टाचार में लिप्त थे।

मिस्टर सत्यप्रकाश ने वहाँ पहुँचते ही सबसे पहले यह काम किया कि वर्षों से एक टेबुल पर जोंक की तरह चिपके हुए घाघ कर्मचारियों को ताश के पत्तों की तरह फेंटना शुरू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि भ्रष्टाचार की आदी हो चुकी मछलियाँ बिना पानी के तड़पने लगी।

अंततः मछलियों के सरदार मगरमच्छ ने अपने ख़ास लोगों के साथ मिलकर मिस्टर सत्यप्रकाश को बदनाम करने और उनके मुँह पर कालिख पोतने के मक़सद से साज़िश के ताने-बाने बुनना शुरू कर दिए। योजना के तहत एक दोपहर जब मिस्टर सत्यप्रकाश हमेशा की तरह लंच के लिए घर गए और उनके चेंबर का मुख्य चपरासी लघुशंका को, तभी घात लगाकर बैठे मगरमच्छ के विश्वसनीय साथी ने लाखों रुपयों से भरा ब्रीफ़केस चुपके से उनकी कुर्सी के नीचे रखकर विजिलेंस ऑफिस को फ़ोन लगा दिया।

वो तो भला हो, विजिलेंस ऑफ़िसर का जो कभी मिस्टर सत्यप्रकाश का क्लास फैलो रहा था और संयोग से इन दिनों उसी शहर में पदस्थ था। जो सत्यप्रकाश की ईमानदारी और सख़्ती से भलीभाँति परिचित ही नहीं, बल्कि क़ायल रहा है। वरना कलियुग में ईमानदारी की मिसाल मिस्टर सत्यप्रकाश उर्फ़ हरिश्चंद्र की ज़िंदगी भर की एकमात्र कमाई ईमानदारी के मुँह पर कालिख पुत गई होती।

चिता की आग

कहानी

सुधीर कुमार सोनी

समाज की बैठक आज निरस्त हो गई थी। बहुत सारे सदस्य आज अनुपस्थित थे।समाज के दान दाताओं द्वारा भवन निर्माण हेतु दी गई जमीन के विषय पर चर्चा होनी थी, जो नहीं हो पाई। जमीन से सम्बंधित कार्य के कर्ता-धर्ता अजय जी ने मुझसे कहा 'स्वर्गीय मुरलीधर धर का मृत्यु प्रमाण पत्र चाहिए, कोर्ट में जमा करना है। समाज की भूमि का केस अब अपने अंतिम चरण में है।'

'उसकी मृत्यु के वर्ष की जानकारी मिल जाए तो आवेदन देकर मृत्यु प्रमाण-पत्र मिल सकता है।' मैंने कहा।

'जानकारी तो है मेरे पास, उसकी मृत्यु का वर्ष मालूम है लेकिन तारीख नहीं मालूम।' उन्होंने एक कागज में उनकी मृत्यु का वर्ष लिखकर मुझे दे दिया। अब वर्ष के आधार पर उसकी तारीख की जानकारी लेना था।

'शमशान घाट के पुराने रजिस्टर में ढूंढने पर तारीख मिल सकती है। बहुत मुश्किल काम है, मगर मैं कोशिश करता हूँ, शायद मिल भी जाये।' मैंने उनसे कहा और घर आ गया।

मेरे घर के सामने चाय का एक छोटा सा ठेला है। उस ठेले में दो भाई बैठते हैं उत्तम और नारायण। उनका घर शमसान घाट के पास ही है। उत्तम सुबह पाँच बजे अपनी चाय की दुकान खोल लेता है। सुबह टहलने जाते समय मैंने उससे बात की 'भाई उत्तम मुझे शमसान घाट के चौकीदार से काम है। उससे से जान पहचान है क्या ?'

'क्या काम है भैयाजी ? हमारे साथ तो रोज दारु पीने बैठता है चौकीदार । एक नम्बर का गजेड़ी-भंगेड़ी भी है' ऊतम ने कहा।

'मुझे पुराना रजिस्टर देखना था ।किसी के निधन की तारीख देखकर नोट करना है। बहुत ही जरूरी है' मैंने उससे कहा।

'आप आ जाना भैया, वह तो दारूबाज है, पव्वा का पैसा दे देंगे। पुराना रजिस्टर दिखा देगा।' उसने मुझे आश्वस्त किया ।

मैंने उसे सौ रुपये दिए और कहा 'कब आना है बता दे ?'

'आप किसी भी दिन सुबह पाँच बजे या रात के आठ बजे आ जाओ । मैं उसे दारू पीला कर सेट करके रखता हूँ।' उत्तम ने मुझे निश्चिंत रहने को कहा।

दूसरे दिन सुबह पाँच बजे मैं टहलने न जाकर शमशान घाट की तरफ निकल गया। उस दिन रविवार था।उत्तम रविवार को चाय की दुकान नहीं खोलता। शहर की आबादी अब पहले से बहुत बढ़ गयी थी, शमशान घाट अब शहर के भीतर हो गया था और डर पहले की तरह नहीं रहा । अँधेरा अभी भी था। मैंने ज्यादा ठण्ड नहीं होने के कारण आधी बाँह का स्वेटर ही पहना था। सड़कें अभी अँधेरे होने के कारण सूनी सी थी । सुबह टहलने जाने वाले ही सड़क पर दिख रहे थे। मैं कुछ ही मिनटों में शमशान घाट पहुँच गया। जब अंदर पहुँचा देखा चिताएँ ठण्ड के कारण धीमी जल रही थी। कुछ चिताओं की आँच बहुत धीमी हो गई थी। उत्तम वहीं शमशान घाट के अंदर चबूतरे में बैठे बीड़ी पीते दिखा।उसने भी मुझे देख लिया था।

'आइये भैया, मैं अभी उसे बुलाता हूँ।उत्तम ने चौकीदार को शमसान के कार्यालय के बाजू वाले कमरे में आवाज दी' दिवाकर ----- अबे ओ दिवाकर'

उत्तम ने अपने हाथ से दरवाजे को पीटने लगा।लगातार दरवाजे को दस मिनट तक उत्तम पीटता खटखटाता रहा,तब चौकीदार ने खोला।

आँखों को मलते हुए वह कमरे से बाहर निकला, अभी भी वह नशे में था। काला-कलूटा,आँखे लाल थी उसकी ।बाल बिखरे हुए थे।

'तेरे को बोला था ना कि भैया सुबह आएँगे, अभी भी रात की उतरी नहीं क्या ? कुछ नहीं बोला वह।'

'ला पुराना रजिस्टर लाकर दिखा' उत्तम ने उसे डाटते हुए कहा।

'अभी दिखा देता हूँ, आप इसी चबूतरे में बैठ जाइय' दिवाकर ने कहा।

हम दोनों गोल चबूतरे में बैठ गये।गोल चबूतरे के बीच में नीम का पेड़ था।बीस मिनट तक हम बैठे रहे। ठण्ड का दिन था। सुबह शांत और मौन थी हल्की ठण्डी हवा मन को भा रही थी।मैंने देखा एक व्यक्ति चिता के पास बैठा था जिसमें थोड़ी सी आग बाकी थी, मैं उसकी तरफ देखता तो वह सतर्क हो जाता, जैसे वह कोई गलत काम कर रहा हो। अचानक दिवाकर जो शमसान घाट का कर्मचारी था उसने पुराना रजिस्टर के बण्डल को चबूतरे में पटक दिया।हमारा पूरा ध्यान अब बण्डल में बँधे रजिस्टर में चला गया।बण्डल खोलकर सबसे पहले मैंने उस वर्ष का रजिस्टर को अलग करना चाहा। बहुत धूल जमी थी रजिस्टरों में। उस वर्ष के रजिस्टर ढूँढने और धूल हटाने में एक घंटे बीत गये । रजिस्टर को पलटाते- पलटाते मैं थक गया था, उनकी लिखावट भी मुझे समझ नहीं आ रही थी। मैं ऊब गया, उस वर्ष में एक नाम के बहुत से आदमियों की इन्ट्री हुई थी।तारीख नहीं मालूम होने के कारण बहुत परेशानी हो रही थी। सुबह के सात बजे रहे थे । 'मैं रात में आऊँगा आठ बजे के बाद' मैंने उत्तम से कहा और लौटने लगा तो उत्तम ने कहा 'भैया कुछ रुपये और दे दो ना'

मैंने सौ रुपये निकाल के फिर दे दिए। 'रात को रजिस्टर साफ सुथरा करके रखना' मैंने कहा और घर लौटने के लिये बाहर निकला। श्मसान में जो आदमी मुझसे चिता के पास बैठा दिखा था वह बाहर दिखा। शमसान के बाहर सीमेंट का बड़ा सा पाईप रखा था, उसी में घुसा था। उसके साथ दो बच्चे एक औरत भी दिखी।मैं अनदेखा कर घर वापस लौट आया।

काम निपटा कर मैं रात के आठ बजे शमसान पहुंचा। दिवाकर नहीं मिला। बाजू में उत्तम का घर था, अपने घर में उत्तम भी नहीं मिला। मैं शमसान के उसी कमरे के बाहर चबूतरे में बैठ गया। उजाला होने के बावजूद मुझे डर लग रहा था। बाहर भी आठ दस लोग खड़े थे जो वहीं आसपास के रहने वाले थे। सुबह जो आदमी मुझे दिखा था वही आदमी फिर एक बार चिता के पास बैठा दिखा। दबे पांव जाकर उसके पास मैंने देखा कि आखिर वह क्या कर रहा है। उसे मेरे पहुंचने की भनक नहीं हो पाई। मैंने देखा उसने एक पतीले को चिता की आग में चढ़ा रखा था।मुझे देख वह चौक गया।मैंने पूछा 'क्या कर रहे हो तुम यहाँ ?'

'मैं, कुछ भी तो नहीं। मैं यहीं पास रहता हूँ' उसने कहा

'लेकिन यहाँ क्या कर रहे हो।मैंने तुम्हें सुबह भी देखा था चिता के पास, और यह क्या है ?'

मेरे पूछने पर वह घबड़ा गया ।

'क्या है ये ?' मैंने फिर पूछा

'पतीले में चाँवल पका रहा हूँ साहब। यहीं सीमेंट पाइप में रहता हूँ' उसने सिर झुकाकर जवाब दिया।

'तुम इसमें पकाते हो ?' मैंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

'हाँ साबह इसी में पकाता हूँ।भीख मांगता हूँ,जो चाँवल मिलता है उससे चिता की बची-खुची राख में चाँवल पका लेता हूँ।दो छोटे बच्चे और बीबी भी है साथ में । बरसात में गाँव का घर बह गया था। बहुत सारे लोग गाँव छोड़कर शहर आ गए मैं भी शहर आ गया।'

'भटकते-भटकते यहाँ खाली पाइप मिल गया, उसी में रहता हूँ। चिता की आग में भात पकाकर अपने परिवार का पेट भर रहा हूँ ।' इतना कहकर उसने अपना सिर झुका लिया।

कितना दर्दनाक था यह दृश्य देखना मेरे लिए कि एक व्यक्ति चिता की आग में पतीला चढ़ा कर चांवल पका रहा है। इस दृश्य को देख को देख मैं बहुत बेचैन हो उठा था। मेरी आँखों के सामने से आसपास के सारे दृश्य अदृश्य हो चुके थे। मैं सोचने लगा कि दुनिया में कितनी तरह की परेशानियां है।उस व्यक्ति का घर बरसात में बह गया जो मिट्टी का था ।कितनी आसानी से उसने कह दिया कि उसका घर बह गया। उसे ज्यादा दुःख भी नहीं है।दुःख हो भी क्यों आखिर,उसके पास था भी क्या एक मिट्टी का छोटा सा अस्थायी घर ? वह अपना गांव छोड़कर शहर शहर भटक रहा है।

मैंने अपनी जेब में हाथ डाले तो तीन सौ रुपये थे। मैंने उसके हाथ में दिए । 'नहीं साहब नहीं चाहिए' उसने कहा । मैं उसे जबरदस्ती हाथ में पकड़ाकर चला आया।

मैं अपने स्वयं से सवाल पर सवाल किए जा रहा था, पर जवाब मुझे नहीं मिल रहा था। अभी भी आदमी किस स्थिति में जीवन बीता रहा है ? कुछ दिन पहले ही मैंने देखा था एक मुक्कड़ के पास एक आदमी कुत्ते के मुँह से रोटी छीन रहा था। आदमी और कुत्ता दोनों ही भूखे थे।

रात मैं घर वापस तो आया मगर मुझे लग रहा था कि मैं मरा हुआ वापस आया हूँ। कल फिर से जिंदा होने के लिए, क्योंकि अभी तो वह दृश्य मेरे मस्तिष्क में जीवित है तो मैं मरा हुआ हूँ।कल वह दृश्य मेरे भीतर से मर जाएगा मैं सब भूल कर अपने काम में लग जाऊँगा।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारतीय कला एवं कलाकार, परिस्थितियों से संघर्ष

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

मैं और बस मैं की हवा चल रही हो जैसे। गांव के धूल भरी गलियों के, हंसी ठिठोलियों के बीच स्कूल जाने से भी पूर्व यानी गदहिया गोल में भी नाम लिखे जाने से पूर्व कलाकृतियां बनाने वाले बालक सुनील विश्वकर्मा जो आज डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा के रूप में वैश्विक पटल पर अपनी पहचान बनाये हुए हैं, कला को लेकर इसी अमूर्तन और यथार्थ के बीच उठे उहापोह में पिस रहे थे लेकिन गांव की महक कहें या बचपन के संस्कार और गुरु विश्वनाथ त्रिपाठी जी द्वारा दी गई शिक्षा का असर कि सुनील जी यथार्थता की तरफ ही बढ़े और इस तरह बढ़ें कि कृतियों में भव्यता अपने पूरे वजन के साथ उपस्थित हुई है। दिव्यता हर कृतियों में हैं और फिर वो चाहे रंग में हो, रेखा में हो या फिर आकृतियों में। सृजन रग-रग में बसा है आपके। यथार्थ के नजदीक आप शुरू से ही रहे हैं। वस्तुओं, परिस्थितियों, समाज एवं संस्कार को अच्छे से महसूस करते हैं आप, जो कृतियों में स्पष्टतः झलकती भी है।

ऋग्वेद, रामायण, महाभारत जैसे महाग्रंथों की बात करें या विष्णु धर्मोत्तर पुराण, दशकुमारचरित, गीत गोविंद या इससे भी आगे के ग्रंथों को देखें तो पाएंगे कि कला हमारे साथ हमेशा से ही रही है और समृद्ध अवस्था में रही है। मध्यकालीन समय में स्थिति बाहरी मुस्लिम आक्रांताओं की वजह से डांवांडोल होने लगी फलतः कृतियाँ सूक्ष्म होने लगीं लघु चित्रों एवं पटचित्रों की अधिकता होने लगी पर निरंतरता बनी रही। बंगाल, बिहार एवं नेपाल जैसे जगहों पर निर्मित पाल एवं जैन शैली में कृतियाँ छोटी जरूर बनीं पर कला के मर्म को जगाये रखीं। इलेस्ट्रेशन सा काम दिखता हैं यहाँ पर। तालपत्रों या भोजपत्रों पर लिखे ग्रंथों के बीच में ही जगह छोड़ दिया जाता था जहाँ कृतियों का निर्माण होता था। सिंदूर, नील, खड़िया, काजल जैसे स्थानीय और आसानी से प्राप्त खनिज रंगों का प्रयोग इसकी विशेषता रही है। उपर्युक्त रंग भारतीय कला में अधिकांशतः प्रयोग में आये हैं। चित्र प्रायः सवाचश्म और नाक लम्बी होती थी। देश तमाम आक्रांताओं से जूझ रहा था, लोग जूझ रहे थे और कला भी जूझ रही थी पर कला सृजन जरूर हो रहा था। राजस्थानी शैलियों में भी किए गए सृजन के महत्ता को हम कम नहीं आंक सकते बल्कि कह सकते हैं कि बहुत ही मजबूत स्थिति में वहाँ का सृजन भारत में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाती है। मुगल काल तक आते-आते कला उच्च वर्ग के लोगों की वस्तु बनकर रह गई थी। कई स्थानों पर कृतियाँ पूरी तरह इस्लामिक बन गई थीं जबकि मुगलकालीन कृतियों में कलाकृतियों को बढ़िया विस्तार मिला पर विषय वही घिसे-पिटे, कह सकते हैं कि शासक के इशारों पर ही कृतियों का सृजन नहीं बल्कि निर्माण होता था। युद्ध में कलाकारों को ले जाना और चित्र बनवाना जैसे बचकाने कार्यों तक सिमट गया था कलाकार। हाँ पद, प्रतिष्ठा, मुद्राओं का कलाकार हो गया था उस समय का कलाकार। शासक और उसके परिवार, नाते-रिश्तेदारों के शबीह चित्र, किसी को भेंट करने हेतु कोई सुंदर सा नक्काशी वाला चित्र बस यही सब रह गया था। हाँ कुछ कलाकार थे जो अच्छा कर रहे थे पर संख्या नाममात्र में ही थी।

मध्यकाल के भारत में कृतियों पर संकट के बादल तो खूब दिखे, कलाकारों को खूब संघर्ष करना पड़ा, कृतियों को भी अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ी जो आगे भी जारी रही जिस पर विस्तार से लिखा जाना शेष है, फिर कभी चर्चा करूँगा। फिलहाल आधुनिक कलाकारों एवं कृतियों पर चर्चा का इरादा है। अंग्रेजी सत्ता के आने से कलाकार जो एक जगह रुक कर कार्य कर रहे थे सब तितर-बितर हो गये। कला शैलियाँ भी आपस में मिल सी गईं। कोई कलाकार पटना पहुँच गया तो कोई बंगाल पहुँच गया। खिचड़ी सी शैली पनपी उस बीच। कलाकार खुल कर अभिव्यक्ति भी नहीं कर पा रहे थे, अंकुश अधिक था जो धीरे-धीरे समय के साथ खुला तो पर अंग्रेजी हुकूमत और शैलियों के लेप के साथ। कलाकार जो स्वाभिमानी थे, अपने शर्तों पर कार्य करना चाहते थे, धीरे-धीरे चित्रों से दूरी बना लिए। जो खुद को समय के साथ ढाल लिए दूर तक चल सके। पटना कलम कुछ ऐसे ही अस्तित्व में आई। अब तक दरबारी चित्रकारी का तमगा भी गायब सा ही हो गया था। कलाकारों को जब रोजी-रोटी का संकट सताने लगा तो वे अपने मार्ग ही बदल लिए फलतः बीच में काफी समय तक कलाकृतियाँ मिलती ही नहीं है। रिक्तता सी दिखाई पड़ती है उस दौर में। अंग्रेजों के शासनकाल में जब तमाम जगहों पर कला विद्यालय खोले जाने लगे उसके बहुत समय बाद से फिर धीरे-धीरे कृतियाँ नजर आने लगती हैं और आगे तो आधुनिकता के आकाश में आते ही सारे बंधन टूट जाते हैं और भारतीय कलाकार वैश्विक स्तर पर अपनी अलग पहचान रखने लगे हैं।

भारतीय कला का इतिहास तो अथाह है, जहाँ तक हम सबने थाह पाया है वो पूरे का बस कुछ प्रतिशत ही है कारण भारत के सभी कलाकारों को तथा उनके कला को समझ पाना असंभव है। सभी कलाकारों तक हम पहुँच भी पाएंगे शायद ही सोचा जा सकता है। बहुत-बहुत कुछ छूट गया है खैर हम बात करेंगे इधर बीच की कला पर या कला में आधुनिकता पर। प्रागैतिहासिक, अजंता, एलोरा, खजुराहो, मध्यकालीन पोथी चित्र, राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल कला के रास्ते हम आधुनिक भारतीय कला तक का सफर तय करते हैं, उतार-चढ़ाव भी देखते हैं। यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते भारतीय कला पंगुता को प्राप्त कर चुकी थी कारण वही परतंत्रता का दंश ही था। कुछ कलाकारों को छोड़ दिया जाय तो शायद ही कोई कलाकार रहा हो जो स्वतंत्रता विषयक चित्र बनाया हो जिसे देखकर जनता में आक्रोश फूटा हो। सौंदर्य एवं प्राकृतिक विषयक कृतियां शबीह और पक्षियों तक सीमित हो चुके थे। ये सब भी बस मुगल तक ही रहा। मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही आश्रय के खोज में भटकते कलाकार अपने कला और कल से भी भटक गये। उसके बाद कला की छिटपुट गतिविधियां दिखती तो हैं पर निरंतरता, स्पष्ट विवेचनीय कार्य देखने को नहीं मिलता। हालांकि हमारे कलाकारों में पूरी काबीलियत थी जिसका बढ़िया उदाहरण जहाँगीर के समय में तैयार एक यूरोपीय कृति की कई अनुकृतियाँ रहीं जहाँ मूल कृति को पहचान पाना मुश्किल हो उठा, पर कलाकारों को सृजन हेतु मानसिक मजबूती के लिए पर्याप्त माहौल नहीं मिल सका। भारतीयों के प्रति अंग्रेजों के दूषित रवैये ने कुछ समय के लिए भारतीय कला को पटल से गायब ही कर दिया था। कलाकृतियाँ निर्मित तो नहीं हो पा रहीं थीं पर कुछ कलाकार जो कायदे का आर्थिक लाभ भले नहीं प्राप्त कर पा रहे थे फिर भी लगे हुए थे। भटकते हुए कलाकार बिखर गये और कई अलग-अलग जगह रहने लगे। किसी न तैर सकने वाले को बीच मझधार में छोड़ देने पर जो हाल होता है कुछ वही हाल था भारतीय कलाकारों का पर भारतीय कलाकारों ने डूबने के बजाय संघर्ष करना जारी रखा। इन सभी से अलग राजा रवि वर्मा अपने सृजन में रमें रहे। वर्मा के कृतियों में कई सारी खूबियाँ एक साथ देखी जा सकती है। वैचारिक स्वतंत्रता का जबरदस्त प्रतिफल इनके कृतियों में नजर आता है। बहुत कुछ था जो उस समय भी काफी था कला के नाम पर। उधर अंग्रेजी अधिकारी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से भी प्रभावित नज़र आ रहे थे फलतः छिटपुट कलाकारों से यहाँ के संस्कृतियों को उजागर करती कृतियाँ बनवाते और अपने यहाँ भेजवा कर व्यापारिक लाभ भी प्राप्त कर रहे थे। अंग्रेजों द्वारा तमाम परिवर्तन के साथ ही मद्रास, कलकत्ता, लाहौर, बंबई जैसे जगहों पर कला के भी विद्यालय खोले गए जहाँ भारतीयता तो नदारद थी ही तकनीक भी यूरोपियन थी। भारतीय कला पर अंग्रेजों का प्रभाव तो पहले से ही बढ़ रहा था पर इन विद्यालयों के स्थापना के बाद अब पश्चिमी सभ्यता को व्यवस्थित तरीके से यहाँ के कला छात्रों विशेष कर धनाढ्य वर्ग के छात्रों में भरा जा रहा था, जहाँ अप्रत्यक्ष तौर से भारतीय कला को पश्चिमी कला से तुच्छ बताए जाने की कोशिश भी हो रही थी। अजंता, एलोरा आदि जहाँ शैली, सौंदर्य, विषय संबंधी संपन्नता सदियों से विराजमान रही है, को कमतर दिखाने का प्रयास किया जाता रहा। पाश्चात्य पाठ्यक्रम का असर दिखा और कलाकार कम मशीन ज्यादा बने, जिसका कमांड किसी और के हाथ में होता था। छात्र भारतीय और पाश्चात्य के बीच पेंडुलम से झूल रहे थे तथा हार मान कर उनको ही सही मान ले रहे थे। भारतीय कला में पाश्चात्य के आने से नुकसान तो हुआ पर काफी कुछ नया सीखने को भी मिला भारतीय छात्रों को। छात्र तकनीकी रूप से प्रबल तो हो रहे थे पर दुख इनके भीतर से गायब होते भारतीयता से था। एक से बढ़कर एक संपन्न कलाकृतियों वाले देश के छात्र अपने पर भरोसा नहीं कर पा रहे थे, वे अपने कृतियों को श्रेष्ठ मान सकने से पूर्व ही भ्रमित हो जा रहे थे। उधर वैश्विक स्तर पर भी बहुत कुछ उथल-पुथल हो रहा था। कई देशों में आधुनिकता के नाम पर कला में तमाम प्रयोग हो रहे थे। कलाकार स्वतंत्र होकर यथार्थवाद, प्रभाववाद, उत्तर प्रभाववाद सहित और भी कई वादों में मगन थे जबकि यहाँ बहुत कुछ होना शेष था।

रजत जयंती मनाता एक हिमालयी राज्य

उत्तराखंड

वेद विलास उनियाल

(उत्तराखंड के वरिष्ठ पत्रकार)

हिमालयी राज्य उत्तराखंड अपनी रजत जयंती मना रहा है। 9 नवंबर 2000 को उत्तराखंड के लोगों में जहां राज्य के बलिदानियों के लिए भावपूर्ण यादें थीं वहीं आंखों में सपने थे। यह एक राज्य का मिल जाना भर का उत्साह नहीं था। इसके पीछे कुछ दशक नहीं बल्कि सदियों की कसक थी। कठिन चुनौतियों के बीच कुहासा छंटने की उम्मीद में लोगों ने अपने नए राज्य का स्वागत किया था। उत्साह और करतल ध्वनि के बीच संदेश यही था कि अलग उत्तराखंड अपने संसाधनों के अनुरूप विकास करेगा और यह स्वाभाविक भी था।

जब उत्तराखंड को अलग राज्य बनाने का आंदोलन चला, तो यही कहा जाता था कि नया राज्य अपने संसाधनों पर विकास करेगा। उत्तराखंड आंदोलन की यादों में रह रहकर वह दृश्य नजर आता है, जिसमें दिल्ली के जंतर मंतर में छोटे छोटे बच्चे हाथों में तख्तियां लिए दिखे थे। कोदा झँगोरा खाएंगे उत्तराखंड राज्य बनाएंगे। यह चित्र उस स्वयंस्फूर्त आंदोलन का एक प्रतीक चित्र की तरह था। उत्तराखंड जिसे शुरु में उत्तरांचल नाम दिया गया था, वहां के लोग किसी नए सवेरे के साथ राज्य प्राप्ति का उद्घोष कर रहे थे। तब पच्चीस साल का यह सफर कुछ पलट कर देखने के लिए प्रेरित करता है। हम उन लक्ष्यों को कितना हासिल कर सके। लेकिन, क्या हमारे सरोकार या विकास की प्रक्रिया आंखों की नमी को किसी हद तक दूर कर पाई है। सियासत की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि जो सत्ता में है, वो अपनी उपलब्धियों को बखान करता है। विपक्ष का सत्ता की कमियों को निशाना बनाना भी स्वाभाविक है। आंकड़े भी अपनी तस्वीर दिखाते हैं। लेकिन, आंकड़ों की बहस भी कई बार यथार्थ को सामने नहीं ला पाती। यही वजह है कि कई बार चमकते आंकड़ों से व्यक्ति थाह नहीं ले पाता और ठीक इसके विपरीत कई बार आंकड़े फैलाई गई व्याप्त निराशा को ध्वस्त करते नजर आते हैं।

उत्तराखंड के संदर्भ में कहें, तो यहां राजनीतिक अनिश्चितता बनी रही। उत्तराखंड में 25 साल के इस सफर में दस लोग सीएम की कुर्सी पर बैठे। इसलिए जब उत्तराखंड की अपेक्षाओं की बात होती है, तो बीजेपी और कांग्रेस दोनों ही जवाबदेही बनते हैं। जहां राज्य की अपनी उपलब्धियों की बात है, तो निश्चित है कि दोनों सियासी दल उसका श्रेय अपनी अपनी तरह से लेना चाहेंगे। यह जरूर है कि लगातार दो बार चुनाव जीतने और वर्तमान में सत्ता में होने के कारण अलग अलग संदर्भों में बीजेपी से ज्यादा अपेक्षा और सवाल होना स्वाभाविक है। उत्तराखंड आंदोलन के समय यह सवाल भी उठता था कि आखिर इस पहाड़ी राज्य के पास आखिर है क्या। राज्य बन तो जाएगा, लेकिन इसे संभालने में कई तरह की दिक्कतें आएगी।

इसके अपने संसाधन बहुत कम है। इसका वित्तीय आधार डगमगाएगा। लेकिन, इन दलीलों को नकारते हुए राज्य की कल्पना करने वाले कहा करते थे कि राज्य बनने पर यह आदर्श राज्य होगा। पर्यटन, बिजली, पानी, वन यहां का आधार होगा। यूपी जैसे बड़े राज्य का एक पर्वतीय इलाका भर रह जाने से इसकी जो उपेक्षा हुई, उससे हटकर यह राज्य अपने हौसले की उड़ान भरेगा। उत्तराखंड जिन पगडंडियों से होता हुआ आज अपनी रजत जयंती मना रहा है उसमें उपलब्धियों को मापने का आधार आर्थिक विकास भी होता है। साथ ही समाज संस्कृति और परंपरा भाषा स्तर पर आकलन भी होता है। लेकिन, यह भी देखा जाता है कि हमारे सामने तब जो चुनौतियां थीं उनसे किस स्तर पर समाधान कर पाए हैं। साथ ही यह भी देखा जाता है कि आज के समय हमारे सामने नई चुनौतियां क्या हैं।

चलताऊ मुहावरों में यह कहना गलत होगा कि कुछ हुआ ही नहीं। ज्यादा दूर न जाएं तो नब्बे के उत्तराखंड में और आज के उत्तराखंड की बीच के अंदर की कुछ चीजें साफ स्पष्ट नजर आती है। बेहतर होती सड़क, हवाई सेवा का विस्तार, पहाड़ों तक रेल पहुंचाने का तेजी से होता उपक्रम, लोगों का अपने स्तर पर छोटा मध्यम कारोबार शुरु करना, होमस्टे योजना को बढावा, पयर्टकों का तेजी से उमड़ना, गांव में नल-जल की सुविधा, पीएम आवास योजना राज्य में निवेश का आना इसके सकारात्मक पहलु हैं। नीति आयोग के एसडीजी रैंकिंग में पहला स्थान उत्तराखंड ने पाया है। वर्ष 2024 -25 के आंकड़ों को आधार माने तो प्रति व्यक्ति आय में पिछले दो वर्षों में 26 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है। निवेशकों का भी कुछ रुझान दिखा है। राज्य में पांच हजार से ज्यादा होम स्टे का पंजीकरण हुआ। राज्य की जीडीपी बढी है। केंद्र के दो लाख करोड़ के प्रोजेक्ट चल रहे हैं। बीजेपी सरकार दावा करती है कि राज्य में नकल रोकने के लिए वह देश का सबसे कडा कानून लेकर आई है। देहरादून में सैन्यधाम का बनना, तीर्थ धामों का विकास, सड़क सेवाओं का विस्तार, केदारनाथ में रोप-वे लगाने की योजना राज्य के विकास के उजले पक्ष के साथ है।

कांग्रेस अपने समय की उपलब्धियों का चार्ट सामने रखती हैं। कांग्रेस कहती है कि उसने राज्य की पहली चुनी सरकार के समय विकास का एक आधार खड़ा कर दिया था। और निश्चित विकास के इस सोपान में कांग्रेस के भी अपने काम है। शायद ही बीती शताब्दी के आखरी वर्षों में भी किसी ने कल्पना की होगी कि कभी रेल पटरियों पर ऋषिकेश से चलकर कर्णप्रयाग तक पहुंचेगे। बदले उत्तराखंड में आज अपनी संस्कृति खान पान की शैली को उत्साह से बताया ही नहीं जाता बल्कि अपनाया भी जा रहा है। कुछ स्टार्ट अप भी शुरू हुए। जहां राज्य की बदली हुई छवि दिखती हैं वहीं कुछ चुनौतियां भी दिखती है। कुछ समस्याएं नए सिरे से सामने खड़ी हुई। कुछ नए दंश भी नजर आते हैं। समर्थ भू-कानून को लेकर आवाज उठ रही है। बेशक 1950 का दायरा शायद संभव न हो, लेकिन राज्य की स्थापना को आधार तो बनाया ही जा सकता है। बार बार आती आपदाएं डराती हैं। बेहतर आपदा प्रबंध तंत्र हमारी प्राथमिकता में होना चाहिए था। इस हिमालयी क्षेत्र में जापान स्वीटजरलैंड या नार्वे की तरह सिस्टम खड़ा नहीं कर पाए हैं। कानून व्यवस्था में भी कुछ बड़े झोल दिखे हैं। और लोगों को इसके खिलाफ सड़क पर आने के लिए मजबूर होना पडा है।

जिस विकास की हम बात करते हैं उसकी सदूर ग्रामीण इलाकों तक पहुंच होनी चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की दरकार बनी हुई है। जिसे विकास कहा जा रहा है वह घूमफिर कर तीन जिलों तक सिमट कर रह जाता है। पहाडों में सीमांत इलाके आज भी चिकित्सा आधुनिक शिक्षा के लिए बाट जोह रहे हैं। ग्रामीण इलाकों कस्बों से में सामान्य इलाज के लिए भी लोगों को देहरादून आना पडता है। जंगली जानवरों का संकट बढा है। अकेले 2025 में भालुओं के 90 हमलों की रिपोर्ट है। गुलदार का आतंक भी बढा है। बंदर खेत खलियानों को नुकसान पहुंचाते हैं। मैदानी क्षेत्रों और पहाड़ के बीच एक बड़ा अंतर साफ झलकता है। राज्य से पलायन भी थमा नहीं है। बेशक कुछ लोगों ने अपने स्तर पर गांव को संवारने का रुझान दिखाया। लेकिन, उत्तराखंड में गांव से मैदानी क्षेत्रों मे होता पलायन कई गलत अंदेशों के साथ है। पेपर लीक का मामले जिस तरह उठते रहे हैं, उसमें सरकार केवल यह कहकर संतुष्ट नहीं हो सकती कि इसमें लिप्त लोगों को पकड़ा जा रहा है। इस पूरे सिस्टम पर नकेल डालनी होगी। युवाओं को रोजगार की दरकार है। रोजगार के अभाव ही पलायन का कारण बनता है। रिवर्स पलायन की कल्पना अभी पूरी तरह साकार नहीं हुई है। आंकड़े भले बेहद रंगीन हों, पर युवाओं को रोजगार चाहिए।

उत्तराखंड बनने के बाद जनप्रतिनिधियों और राज्य की जनता के बीच संवादहीनता की स्थिति देखी गई है। आशय यही है कि उत्तराखंड राज्य में स्थितियां बदली है। लेकिन, लोग जिस तरह अपेक्षा करते हैं उसमें वह महसूस करते हैं कि हालात इससे भी बेहतर हो सकते थे। आंदोलन की आंच में नए राज्य में राजनीति में जिस शुचिता की लोग अपेक्षा कर रह थे, उसमें हताशा के स्वर भी उभरते दिखे हैं। सवाल उत्तराखंड की आबोहवा जमीन और खुशबू को बचाने का भी है। इसे लपलपाती नजरों से भी बचाना है। प्रकृति उत्तराखंड की असली धरोहर है। राज्य बनने के साथ ही देहरादून को अस्थाई राजधानी बनाकर भविष्य में गैरसैण को राज्य की राजधानी बनाने की बात अब पहली की तरह उलझी हुई है। वही विस्तार पाती राजधानी देहरादून की खूबसूरती मिट रही है। ऐसे तमाम सवालों के बीच उत्तराखंड को अब आगे का सफर शुरू करना है।

कोर्ट रुम ड्रामा को नई ऊँचाई देती 'हक'

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

इमरान हाशमी और यामी गौतम की फिल्म 'हक' सिनेमाघरों में 07 नवम्बर को रिलीज़ हो गई है। यह एक गम्भीर कोर्टरूम ड्रामा है, जो इस फिल्म के स्तर को एक नई ऊँचाई देता है। इसमें इमरान हाशमी और यामी गौतम धर ने मुख्य भूमिकाएं निभाई हैं। इस फिल्म का निर्देशन सुपर्ण एस. वर्मा ने किया है, जो पहले 'द फेमिली मैन' जैसी वेबसिरीज़ बना चुके हैं। हक का मतलब होता है अधिकार। यह फिल्म एक ऐसी औरत की कहानी है जो अपने हक और सम्मान के लिए समाज और कानून से लड़ती है।

कहानी का कालक्रम वर्ष 1980-90 का है, जब देश में महिलाओं के अधिकारों और तलाक के कानूनों पर बहुत चर्चा हो रही थी। यामी गौतम ने शाजिया बानो नाम की एक मुस्लिम महिला की भूमिका निभाई है। शाजिया का पति अब्बास खान (इमरान हाशमी) उसे छोड़ देता है। अब्बास धर्म का सहारा लेकर अपने गलत कामों को सही बताने की कोशिश करता है। वह दूसरी शादी कर लेता है और तलाक के नियमों का गलत इस्तेमाल करता है। शाजिया अपने गुजारे और इज्जत के हक के लिए अदालत जाती है। उसकी यह लड़ाई सिर्फ अपने पति से नहीं, बल्कि समाज और पुराने सोच से भी है।

करीब चार दशक पहले बहुचर्चित शाहबानो मामले में सुप्रीम कोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं के 'हक' में बड़ा फैसला सुनाया था। इसमें तलाक के बाद गुजारा भत्ता दिए जाने के स्पष्ट आदेश दिए गए, जिसने देश में काफी कुछ बदल दिया। शाहबानो मामले से प्रेरित इस हफ्ते रिलीज हुई इस फिल्म में मुस्लिम महिलाओं को देश के संविधान के तहत मिले उनके इसी अधिकार की कहानी को विस्तार से फिल्माया गया है।

फिल्म के निर्देशन का जहाँ तक सवाल है, डायरेक्टर सुपर्ण वर्मा ने एक दर्दभरी कहानी को बेहद संजीदगी के साथ परदे पर उतारा है। फिल्म की कहानी रेशू नाथ ने लिखी है। फिल्म की शुरुआत खुशनुमा प्रेम कहानी से होती है, जो दर्शकों को अपने साथ बाँधे रखती है। मध्यांतर से पहले कहानी में एक मोड़ आता है और दूसरे भाग में कोर्ट रूम में जबरदस्त बहस का सिलसिला चलता है। कोर्ट में कानूनी जिरह के बीच शाजिया को समाज की ओर से भी तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ता है। एक ऐसी कहानी जिसका अन्त दर्शकों को पहले से ही पता है। उसमें भी सुपर्ण वर्मा आखिर तक दर्शकों की उत्सुकता बनाए रखने में कामयाब रहे हैं।

इमरान हाशमी ने अरसे बाद परदे पर अच्छा काम किया है। खासकर कोर्टरूम वाले दृश्यों में वह खूब जँचते हैं। जबकि यामी गौतम धर ने परदे पर शाजिया की भूमिका निभाई है और एक पीड़ित महिला की भूमिका को उन्होंने दर्द भरे अंदाज़ में परदे पर उतारा है। फिल्म का संगीत ठीक ठाक है, वहीं छायांकन (सिनेमाटोग्राफी) और कैमरावर्क भी खूबसूरत बन पड़ा है। निर्देशक ने इस पीरियड ड्रामा फिल्म में उस दौर से जुड़ी चीजों को अच्छा इस्तेमाल किया है। फिल्म के संवाद और बैकग्राउंड म्यूजिक प्रभावित करते हैं।

यह फिल्म किसी धर्म पर सवाल नहीं उठाती। यह हिन्दू-मुस्लिम की लड़ाई से दूर महिलाओं के अधिकार पर बात करती है। फिल्म में कुछ कमियां भी हैं। इसके कुछ दृष्य ज्यादा नाटकीय लगते हैं। फिल्म को देखकर यह साफ लगता है कि असल कहानी से यह कहानी काफी अलग है। लेकिन कुल-मिलाकर यह फिल्म आपका मनोरंजन करने के साथ-साथ आपको सोचने पर भी मजबूर करती है।

अंडर 15 अंतर जिला क्रिकेट स्पर्धा के सेमीफाइनल में खरगोन को हराकर खंडवा टीम फाइनल में

धार। संभागीय क्रिकेट एसोसिएशन इंदौर के तत्वावधान में धार जिला क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा आयोजित अंडर 15 अंतर जिला क्रिकेट स्पर्धा के सेमीफाइनल में खंडवा टीम ने पहली पारी में 102 रन बनाए थे जिसके जवाब में खरगोन की टीम मात्र 89 रनों पर ऑल आउट हो गई। इस तरह खंडवा टीम को पहली पारी के आधार पर 13 रनों की लीड मिली । खंडवा ने दूसरी पारी में 138 रन बनाए

और खरगोन टीम के समक्ष जीत के लिए 35ओवर में 151 रन का लक्ष्य रखा। खंडवा की ओर से आदित्य राय ने 42 देवेश ने 43 आर्यन ने 26 रनों का योगदान दिया खरगोन टीम की ओर से आदित्य ने चार प्रणय ने तीन विकेट लिए । खंडवा टीम के 151 का लक्ष्य का पीछा करने उतरी खरगोन की टीम मात्र 75 रन बनाकर आल आउट हो गई। लक्ष्य पाटीदार ने सर्वाधिक 22 रन का योगदान दिया। खंडवा की ओर से अथर्व डोडवाल ने 5 सार्थक ने 3 पीयूष ने 2 विकेट लिए अथर्व डोडवाल ने दोनों पारियों में कुल 12 विकेट लेकर में ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता । मप्र क्रिकेट संगठन के सदस्य और पूर्व रणजी खिलाड़ी देवेंद्र परमार ने मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया । मैच के पूर्व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पुरुषोत्तम बिश्नोई रक्षित निरीक्षक ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन सचिव राजेंद्र सिंह चौहान एवं रामगोपाल शर्मा द्वारा किया गया।

शताब्दी दिवस पर खिलाड़ियों ने किया सुन्दर हॉकी का प्रदर्शन

हॉकी खेल विधा में स्वर्णिम इतिहास है धार का: पं. छोटू शास्त्री

धार। राष्ट्रीय खेल भारतीय हॉकी के 100 पूर्ण होने पर सम्पूर्ण भारत में हॉकी शताब्दी वर्ष के रूप में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर धार जिले मे भी हॉकी का मैत्री मैच आयोजित किया गया। जिला हॉकी संघ व हॉकी फिडर सेंटर धार के तत्वाधान मे पुलिस लाईन मैदान पर हॉकी फिडर सेंटर धार व खेल परिसर सरदारपुर के मध्य मैत्री मैच का खेला गया। संघर्ष पूर्ण मुकाबले में खिलाड़ियों ने तेजतर्रार हॉकी का प्रदर्शन किया। दोनो ही टीमो ने एक दुसरे के गोल की ओर जमकर हमले बोले मैच मे दोनो ओर से आधा दर्जन गोल हुए और सभी गोल मैदानी रहे। हॉकी फिडर सेंटर धार ने खेल परिसर सरदारपुर को 4-2 से हरा कर विजय प्राप्त की । मैच के दौरान खेल परिसर सरदारपुर की ओर से कमल कन्नौज, महेश अकोदिया ने एक-एक गोल किए वही हॉकी फिडर सेंटर की और से राग्यश्री बामनिया, श्रैयांष राठौर , खराशु , प्रदीप सिंह परिहार ने एक-एक गोल किए। मैच में राष्ट्रीय हाकी खिलाडी राज्यश्री बामनिया प्लेयर आफ द मैच रही। आलोक मेहरा श्रेष्ठ गोल कीपर रहे।

सरदारपुर के प्रतिभाशाली खिलाडी कमल कन्नौज, महेश अकोदिया, गोलू पांचाल, आयुष को धार जिला हॉकी संघ के जिला अध्यक्ष पं. छोटू शास्त्री एवं वरिष्ठ खिलाडी शमशेर सिंह यादव ने हॉकी स्टिक भेट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर धार जिला हॉकी संघ के अध्यक्ष प. छोटू शास्त्री ने कहा कि हॉकी इण्डिया के सफलतम 100 वर्ष पूर्ण होने के इस गौरवपूर्ण और स्वर्णिम सफर को यादगार बनाने के लिए धार जिला हॉकी संघ ने यह मैत्री मैच आयोजित किया । ऐतिहासिक धार नगरी का हॉकी खेल विधा में स्वर्णिम इतिहास रहा है। धार शहर ने देश और प्रदेश को कई प्रतिष्ठित हॉकी खिलाड़ी दिए है। धार जिला हॉकी संघ जिलेभर में हॉकी खेल विधा का स्वर्णिम और गौरवमयी इतिहास लौटाने और हॉकी के बड़े प्लेयर निकले इसके लिए लगातार गतिविधियां आयोजित कर रहा है। वहीं प्रसिद्ध हॉकी खिलाडी एवं खेल गुरू शमशेर सिंह यादव ने कहा कि हॉकी में भारत की आत्मा बसती है हॉकी को मजबूत रखना हम सबका दायित्व है। हॉकी में भारत पुनः विश्व गुरू बनेगा। इस आयोजन में धार आरआई पुरूषोत्तम बिष्णोई, सुबेदार रविन्द्र कुशवाह का विशष सहयोग रहा। मैच मे जसवंत सोलंकी ने अम्पायर की भूमिका अदा की। इस अवसर पर हॉकी प्रप्रशिक्ष मनीष सोलंकी, सीमा यादव, लखन भाटी सहित खेल प्रेमी उपस्थित थे।

आमला रेलवे के लौटेंगे पुराने दिन, वार्ड क्र. 5 से सटी हुई रेलवे की रिक्त भूमि पर बनेगा डिपो

आरओएच डिपो के निर्माण हेतु 56.39 करोड़ स्वीकृत, 200 करोड़ की लागत से प्रोजेक्ट होगा पूरा

एस. द्विवेदी बैतूल। भारतीय रेल में जब मध्य रेलवे के अंतर्गत आने वाले आमला स्टेशन से होते हुए रेलवे की लाइन डाली गई थी, तब ब्रिटिश शासन काल में आमला की जनता को स्टीम लोको शेड का उपहार ब्रिटिश सरकार के द्वारा प्राप्त हुआ था, परंतु जैसे-जैसे रेलवे ने आवश्यकतानुसार अपना कलेवर बदला, वैसे-वैसे आमला का रेलवे में महत्व भी कम होता गया और वर्ष 1991 में स्टीम लोको शेड रेलवे द्वारा पूर्ण रूप से बंद कर दिया गया, जिसके कारण आमला की जनता को रेलवे से मिलने वाले रोजगार को लेकर बड़ा झटका लगा। तब से लेकर वर्तमान समय तक स्थानीय जनप्रतिनिधि सहित जिले के राजनेतागण इसके लिए लगातार प्रयास कर रहे थे। लम्बे इंतजार बाद अब स्थानीय विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे और जिले के सांसद व केंद्रीय मंत्री दुर्गादास उईके के अलावा नागपुर रेल मंडल के सीनियर डिवीजन मैकेनिकल इंजीनियर मोहित मंडलेकर के विशेष प्रयासों से आमला में एक रेलवे मालगाड़ी मेंटेनेंस यूनिट का मार्ग प्रशस्त हुआ है, जिसके अंतर्गत मालगाडियों के रेक का परीक्षण व रूटिंन ओवरआईलिंग (आर.ओ.एच.) शेड व सीक वैगनों के रिपेयर शेड हेतु निर्माण यूनिट के प्रथम चरण के निर्माण के लिए 56.39 करोड़ रुपए नागपुर रेल मंडल के यांत्रिकी विभाग द्वारा स्वीकृत कर दिए गए हैं और गत 28 अक्टूबर 2025 को नागपुर रेल मंडल के यांत्रिकी विभाग द्वारा इसका पत्र भी जारी कर दिया गया है। इससे अब आगामी 6 माह के अंदर उक्त प्रोजेक्ट निर्माण कार्य प्रारंभ होने की पूरी संभावना है। यह प्रोजेक्ट पूर्ण होते-होते लगभग 200 करोड़ रुपए की लागत तक पहुंचेगा। इससे रेलवे के लिए अतिरिक्त 200 कर्मचारियों के रोजगार के अवसर भी खुलेंगे, जिससे आमला क्षेत्र में व्यावसायिक गतिविधियों को ऑक्सीजन मिलेगी और आमला रेलवे के बीते हुए सुनहरे अच्छे दिन लौटेंगे। आमला के दृष्टिकोण से यह निर्माण कार्य यहां के लोगों के लिए एक बड़ी सुखद खबर लेकर आने वाला है। बताया गया है कि आरओएच डिपो का काम चार चरणों में पूरा होगा और इसकी कुल लागत लगभग 200 करोड रुपए है। ऐसी संभावना है कि आगामी वर्ष की शुरुआत के साथ ही इस प्रोजेक्ट के प्रथम चरण का काम शुरू हो जाएगा। रेलवे की इस बड़ी निर्माण योजना की घोषणा से हम उम्मीद कर सकते हैं कि अब आमला के समृद्ध और वैभवशाली पुराने दिन फिर वापस लौटने वाले हैं।

आरओएच डिपो बनने से मिलेगी विकास को रफ्तार - रेलवे सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार आरओएच डिपो एवं यार्ड के बनने से यहां मालगाड़ियों के सभी प्रकार के मेंटेनेंस किये जा सकेंगें। जिस ढंग से बीते एक दशक में रेलवे के विस्तार में तेजी देखी जा रही है, उससे बीना, इटारसी, आमला एवं नागपुर के बीच तीसरी लाइन का निर्माण कार्य भी तेजी से चल रहा है और चौथी लाइन की भी घोषणा हो चुकी है। इससे यहां मालगाडियों की संख्या भी बढ़ जाएगी। ऐसे में इटारसी-नागपुर के मध्य आमला में रेलवे की लगभग 348 एकड़ खाली पड़ी भूमि के एक हिस्से में आरओएच डिपो बनाया जाएगा। इससे यहां लगभग 200 रेलवे कर्मचारियों की संख्या भी बढ़ जाएगी। हालांकि दशकों पूर्व भी यहां रेलवे में सैकड़ों कर्मचारी हुआ करते थे। बहरहाल आरओएच डिपो बनने से आमला की अर्थव्यवस्था को एक नई ताकत मिलेगी।

रेलवे की रिक्त पड़ी भूमि पर बनेगा डिपो

सूत्रों के अनुसार आमला रेलवे स्टेशन से एयरफोर्स स्टेशन हेतु जाने वाली रेलवे लाइन के निकट वार्ड क्रमांक- 5 से सटी हुई रेलवे की रिक्त भूमि पर यह शेड तथा डिपो बनाया जाएगा इसके प्रथम चरण में रेलवे ट्रैक बिछाकर पांच लाइन का यार्ड बनाएगा, फिर आरओएच शेड तथा ऑफिस बिल्डिंग का भी निर्माण कार्य होगा। दरअसल इस इलाके में रेलवे के पास उपक्रम खोलने के लिए समुचित जमीन उपलब्ध है, जिससे यहां भविष्य में भी रेलवे के अन्य कार्यों के विस्तार को आसानी से किया जा सकता है। इसके अलावा अमृत भारत स्टेशन की परिकल्पना के अनुसार आमला रेलवे स्टेशन परिसर में विस्तारीकरण एवं निर्माण के अन्य कार्य भी तेजी से चल रहे है।

इनका कहना है -

अभी इस प्रोजेक्ट के निर्माण कार्य हेतु प्रथम चरण के लिए मैकेनिकल डिपार्टमेंट द्वारा गत 28 अक्टूबर 2025 को पत्र जारी करके 56.39 करोड़ रुपए की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है तथा आगामी प्रक्रिया के लिए यह प्रोजेक्ट प्रगति पर है।

- मोहित मंडलेकर, सीनियर डिविजनल इंजीनियर, नागपुर रेल मंडल

आमला में रेलवे की रिक्त पड़ी हुई जमीन की उपलब्धता को देखते हुए इस प्रोजेक्ट को लेकर रेल मंडल नागपुर के डीआरएम, डीएमई सहित अन्य अधिकारियों से चर्चा हुई है। इसके अलावा आमला में वाटिंग यूनिट (रेलवे कोच में पानी भरने हेतु यूनिट) तथा बोरदेही में रेलवे रैक स्थापित करने के लिए मैं और क्षेत्रीय सांसद व केंद्रीय मंत्री डीडी उईके के द्वारा लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। इससे क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और रेलवे आमला के सुनहरे दिन वापस आने से विकास को रफ्तार भी मिलेगी।

- डॉ. योगेश पंडाग्रे, विधायक आमला

नाबालिग से दुष्कर्म मामले में आरोपी को उम्रकैद

स्पेशल पॉक्सो कोर्ट ने सुनाया फैसला, डीएनए रिपोर्ट से हुई थी पुष्टि

बैतूल। बैतूल की स्पेशल पॉक्सो अदालत ने नाबालिग से दुष्कर्म के मामले में आरोपी रमेश गुलहाने को उम्रकैद की सजा सुनाई है। यह मामला दो साल पहले जिले के कोतवाली थाना क्षेत्र में दर्ज किया गया था। कोर्ट ने आरोपी को उसके शेष प्राकृतिक जीवनकाल तक कारावास और दस हजार रुपए जुर्माने का आदेश दिया है। पुलिस के अनुसार, वर्ष 2023 में दर्ज शिकायत में 12 वर्ष से कम आयु की एक बालिका ने बताया था कि रमेश गुल्हाने उसे कई बार अपने घर बुलाकर दुष्कर्म करता था। आरोपी बालिका को पैसे देकर चुप रहने की धमकी भी देता था। बालिका के परिजनों को घटना की जानकारी होने पर उन्होंने कोतवाली थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस ने रमेश गुल्हाने के खिलाफ मामला दर्ज किया। घटना की पुष्टि डीएनए रिपोर्ट से भी हुई थी। आरोपी ने बाद में कोतवाली पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया। मेडिकल परीक्षण और दस्तावेजी कार्रवाई के बाद उसे विशेष पॉक्सो कोर्ट में पेश किया गया। अदालत में उसकी ओर से जमानत आवेदन प्रस्तुत नहीं किया गया, जिसके बाद उसे जेल भेज दिया गया। विशेष पॉक्सो न्यायालय बैतूल ने सुनवाई के बाद 74 वर्षीय आरोपी रमेश गुल्हाने पिता नामदेव गुल्हाने को दोषी ठहराया। न्यायालय ने सजा सुनाई। अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक वंदना शिवहरे ने पैरवी की। इस दुष्कर्म की घटना के बाद हुए बलवे के मामले में पुलिस ने 10 युवकों को गिरफ्तार किया था। इन आरोपियों पर बलवा, आगजनी और शासकीय कार्य में बाधा डालने जैसे गंभीर आरोप लगाए गए थे।

नि :शुल्क विशाल स्वास्थ्य शिविर कल

बैतूल। ग्राम जामठी स्थित भारत भारती हॉस्पीटल में 10 नवंबर दिन सोमवार को सुबह 9 बजे से सायं 4 बजे तक नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर एल.एन. मेडिकल कॉलेज एवं जे.के. हॉस्पिटल भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होगा। शिविर में हृदय रोग, किडनी, लीवर, हड्डी रोग, शिशु रोग, स्त्री रोग, हर्निया, हाइड्रोसील, पाइल्स, पथरी, बच्चेदानी से संबंधित ऑपरेशन सहित मधुमेह, ब्लड प्रेशर, थायराइड, एलर्जी, माइग्रेन, सर्दी-जुखाम, अल्सर जैसे रोगों का निःशुल्क उपचार किया जाएगा।

आमला में किसान कांग्रेस ने मुख्यमंत्री का पुतला जलाया

आमला। आमला में शनिवार को मध्यप्रदेश किसान कांग्रेस ब्लॉक आमला के नेतृत्व में कांग्रेसजनों ने जनपद चौक पर किसानों की समस्याओं को लेकर जोरदार प्रदर्शन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का पुतला दहन किया गया। बाद में राज्यपाल के नाम तहसीलदार को एक ज्ञापन भी सौंपा गया। प्रदर्शन में किसान कांग्रेस, ब्लॉक कांग्रेस, महिला कांग्रेस, यूथ कांग्रेस और सेवा दल सहित विभिन्न कांग्रेस विंग के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शामिल हुए। इस अवसर पर पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे,

विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी रहे मनोज मालवी, ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष मनोज देशमुख और नगर पालिका अध्यक्ष नितिन गाडरे जैसे प्रमुख नेता भी मौजूद रहे। किसान कांग्रेस के ब्लॉक अध्यक्ष रविकांत उघड़े और जिला अध्यक्ष जगदीश कोचरे के नेतृत्व में तहसीलदार रिचा कौरव को राज्यपाल के नाम दस सूत्रीय ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में प्रमुख मांगों में पीला मोजेक से खराब हुई सोयाबीन फसलों का तत्काल सर्वे कर मुआवजा और बीमा लाभ देने की मांग की गई। इसके साथ ही मक्का की फसल को समर्थन मूल्य पर खरीदने, अतिवृष्टि से प्रभावित मक्का का मुआवजा देने और रबी फसलों की सिंचाई के लिए 10 घंटे बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने की मांग भी शामिल थी। अन्य मांगों में उद्यानिकी फसलों जैसे आलू, मटर, भिंडी और गोभी को बीमा योजना में शामिल करने की बात कही गई। किसानों ने विपणन समिति आमला से यूरिया खाद की नियमित आपूर्ति शुरू करने और उप मंडी आमला में शीघ्र सब्जी मंडी प्रारंभ करने की भी मांग की।

बैतूल में ठंड की दस्तक, पारा 8 डिग्री गिरा

बाजारों में गर्म कपड़ों की मांग तेज

बैतूल। जिले में ठंड ने दस्तक दे दी है। पहाड़ों से आ रही बर्फीली हवाओं के कारण तापमान में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है। चार दिनों में बैतूल का न्यूनतम तापमान लगभग 8 डिग्री सेल्सियस नीचे आ गया है। 4 नवंबर को न्यूनतम तापमान 21.2 डिग्री सेल्सियस था, जो 8 नवंबर को घटकर 13 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। शुक्रवार को न्यूनतम तापमान 13.2 डिग्री सेल्सियस और शनिवार को 13.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। रात के तापमान में 3.8 डिग्री सेल्सियस की गिरावट से ठिठुरन बढ़ गई है। ठंड के बढ़ते असर के साथ ही लोगों ने गर्म कपड़े निकालना शुरू कर दिया है। बैतूल का अधिकतम तापमान भी 26.5 डिग्री सेल्सियस पर आ गया है, जिससे दिन में भी

सर्दी का एहसास होने लगा है। शाम ढलते ही ठंडी हवाओं का प्रभाव और तेज हो जाता है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि उत्तर भारत में बर्फबारी शुरू होने के बाद इसका असर बैतूल सहित पूरे मध्यप्रदेश में महसूस किया जाएगा। आने वाले दिनों में तापमान में और गिरावट दर्ज होने का अनुमान है।

जैकेट, शॉल-टोपी की बिक्री में तेजी आई- सर्दी बढ़ने के साथ ही बाजारों में गर्म कपड़ों की दुकानों पर भीड़ बढ़ने लगी है। मुख्य बाजार, गंज क्षेत्र और कोठी बाजार में व्यापारी अपनी दुकानों को आकर्षक रूप से सजा रहे हैं। ऊनी स्वेटर, जैकेट, शॉल और टोपी की बिक्री में तेजी आई है। दुकानदारों के अनुसार, इस साल नए डिजाइन और फैशन वाले गर्म कपड़ों की मांग अधिक है। महिलाएं शॉल, स्टॉल और स्वेटर की ओर आकर्षित हो रही हैं, जबकि युवाओं में ट्रेंडी जैकेट और हुडी का क्रेज देखा जा रहा है। बच्चों के लिए कार्टून कैरेक्टर वाले ऊनी कपड़ों की विभिन्न वैरायटी भी उपलब्ध कराई गई है।

श्री राम फार्मेसी कॉलेज में 150वां वंदे मातरम दिवस मनाया

बैतूल। श्री राम फार्मेसी कॉलेज में वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ मनाई गई। इस अवसर पर श्री राम फार्मेसी कॉलेज में समस्त स्टाफ एवं विद्यार्थी मौजूद रहे। विद्यार्थियों द्वारा महाविद्यालय में वंदे मातरम दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें राष्ट्रीय गीत की प्रस्तुति दी गई। प्राचार्य श्रीमती रोशनी खातरकर ने कहा कि यह गीत भारत की आजादी एकता और कर्तव्यों का प्रतीक हैं। उन्होने बंकिमचंद्र चटोपाध्याय को नमन कर स्वदेशी का संकल्प लिया।

परम पूज्य गणाचार्य 108 श्री विरागसागरजी महा मुनिराज का 33वां आचार्य पदारोहण दिवस मनाया

धार। दिगम्बर जैन समाज में विराजित उपाध्याय मुनि श्री विभंजनसागरजी के सानिध्य में समाधिस्थ पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागरजी महा मुनिराज का तेतीसवां आचार्य पदारोहण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम सम्पूर्ण समाज की उपस्थिति में मामाजी टेंट हाउस के कारखाना स्थल पर सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में कु अद्विता व अद्वेत ने मंगलाचरण नृत्य प्रस्तुत किया।

छाबड़ा परिवार द्वारा पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महा मुनिराज के चित्र अनावरण कर द्वीप प्रज्वलन किया । साथ ही पूज्य मुनिश्री के पादप्रक्षालन कर शास्त्र जिनवानी भेंट की। आचार्य श्री के बारे में मुनिश्री ने अपने प्रवचन में कहा की आचार्य श्री में सत्रह वर्ष की आयु में गृहत्याग कर संयम का मार्ग धारण कर सन 1983 में दिगंबर मुनि दीक्षा धारण कर ली थी। आचार्य विरागसागर जी महाराज को धर्म का गहन अध्ययन था। द्रोणागिरी तीर्थ क्षेत्र पर सन् 1992 में आचार्य विमल सागर जी के द्वारा आचार्य पद दिया गया। आचार्यश्री ने 300 से अधिक संयमियों को दीक्षा प्रदान की। साथ ही 170 मुनि व्रतियों को सल्लेखना समाधि करवाई। आज भी आचार्य श्री के

द्वारा दीक्षित शिष्य मुनिसंघ व आर्यिका संघ सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैनधर्म की प्रभावना वृद्धि कर रहे है।

छाबड़ा परिवार द्वारा गुरुदेव के चातुर्मास में मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य प्राप्त किया था। इस कार्यक्रम में चातुर्मास मंगल कलश को लाभार्थी परिवार के यहाँ विराजमान गुरुदेव द्वारा किया गया। प्रदीप,मयंक, मयूर, जुगमंदर, विकाश छाबड़ा द्वारा समस्त समाज का भोजन प्रसादी भी रखा गया ।

कार्यक्रम के अंत में आभार छाबड़ा परिवार ने माना। कार्यक्रम में समाज अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल सचिव संजय छाबड़ा विशेष रूप से उपस्थित थे । जानकारी मीडिया प्रभारी संजय गंगवाल ने दी।

जिले में उत्साहपूर्वक मनाया जाएगा भगवान बिरसा मुंडा जयंती व जनजातीय गौरव दिवस यात्रा, 13 विकासखंडों व जनजातीय विधानसभाओं से गुजरेगी

जनजातीय गौरव दिवस पर होगा आदिवासी प्रतिभाओं का सम्मान : सरदार सिंह मेड़ा

धार। भगवान बिरसा मुंडा के 150वें जन्मदिवस पर जनजातीय गौरव यात्रा को लेकर भाजपा कार्यालय में पत्रकार वार्ता आयोजित की गई । भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा अभियान टोली संयोजक राकेश पटेल, विधानसभा संयोजक मोहन पटेल, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा मौजूद रहे।

भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती ने बताया कि भगवान बिरसा मुंडा के 150 वें जन्मदिवस पर जिलों के 13 विकासखंडो व जनजातीय विधानसभाओं से यह जनजातीय गौरव यात्रा गुजरेगी । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस पूरे देश में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर जिले में भी अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है और मध्यप्रदेश सरकार, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता तथा समाज जन उत्साहपूर्वक इस समारोह को मनाएंगे। वहीं,जनजातीय गौरव यात्राओं के समापन समारोह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी भी जुड़ेंगे। यात्राओं का समापन 15 नवंबर को जबलपुर और अलीराजपुर में होगा। जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा ने कहा कि 11 नवंबर 2025 से यात्राओं का विधानसभावार प्रारंभ होगा। यात्राओं में चौपाल का आयोजन किया जाएगा । यात्राओं का रात्रि विश्राम गांवों में होगा। यात्राओं में आयोजित सभाओं में प्रबुद्धजनों एवं छात्र-छात्राओं का सम्मान। 13 नवंबर 2025 को सभी महापुरूषों के स्थलों पर साफ-सफाई दीप प्रज्जवलन किया जाना है।

25 साल के जीवन में देश-समाज को दिशा दे गए भगवान बिरसा मुंडा

अभियान टोली संयोजक राकेश पटेल ने बताया कि भगवान बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर, 1875 को एक किसान परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा पहले एक मिशनरी स्कूल में हुई, लेकिन बाद में जब उन्हें लगा कि उनकी शिक्षा सही दिशा में नहीं है, तो वे अपने पारंपरिक धर्म की ओर लौट आए। उन्होंने देखा कि आदिवासियों का सामाजिक और आर्थिक शोषण हो रहा है। हमारे सांस्कृतिक ताने-बाने पर हमले हो रहे हैं, तो उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ विद्रोह कर दिया। उन्हें सन् 1900 में गिरफ्तार कर लिया गया और गिरफ्तारी के कुछ दिनों बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। भगवान बिरसा मुंडा सिर्फ 25 साल जीवित रहे, लेकिन इतनी कम आयु में उन्होंने देश और समाज को नई दिशा दी। उन्होंने आदिवासी समाज के सुधार के लिए शराबबंदी, चोरी न करने और झूठ से दूर रहने जैसे अनेक नियम बनाए। उनके संघर्ष, त्याग और बलिदान को सम्मान देते हुए आदिवासी समाज के लोग उन्हें 'धरती आबा' यानी धरती के भगवान या पिता के रूप में पूजते हैं।

71 की उम्र में सुलक्षणा का सुर थमा

अस्सी के दशक की फ़िल्म अभिनेत्री और गायिका सुलक्षणा पंडित का निधन हो गया। खास बात यह कि जिस दिन संजीव कुमार की पुण्यतिथि थी, उसी दिन सुलक्षणा की भी आंखें बंद हुई। क्योंकि, दोनों की शादी की बातें लंबे समय तक चर्चा में रही, लेकिन हो नहीं सकी। सुलक्षणा का अभिनय करियर 70 और शुरुआती 80 के दशक में अपने शिखर पर था। उस दौर में वह बॉलीवुड की जानी-मानी अभिनेत्रियों में से एक थीं। उन्होंने उस समय के लगभग सभी टॉप एक्टर्स के साथ काम किया।

अभिनेत्री और गायिका सुलक्षणा पंडित का 71 की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने गुरुवार को मुंबई के नानावती अस्पताल में आखिरी सांस ली। वे अभिनेत्री विजेता पंडित और संगीतकार जोड़ी जतिन-ललित की बहन थीं। ललित पंडित ने बहन सुलक्षणा के निधन की पुष्टि की। उन्होंने बताया कि सुलक्षणा का निधन कार्डियक अरेस्ट के चलते 6 नवंबर रात 8 बजे हुआ। उनका अंतिम संस्कार आज 7 नवंबर की दोपहर होगा। इस खबर के बाद फिल्म इंडस्ट्री में शोक है। सुलक्षणा पंडित ने न सिर्फ फिल्मों में अपनी छाप छोड़ी, बल्कि अपने गायन से लोगों के दिलों को भी जीता था। सुलक्षणा पंडित का जन्म 1954 में हुआ था और वे एक संगीत-परिवार से ताल्लुक रखती थीं। उनके चाचा महान शास्त्रीय संगीत गायक पंडित जसराज थे। उनकी तीन बहनें और तीन भाई हैं, जिनमें भाई जतीन-ललित जोड़ी के रूप में प्रसिद्ध संगीतकार बने।

सुलक्षणा ने 9 साल की उम्र से संगीत की राह पकड़ ली थी। 1967 में उन्होंने प्लेबैक सिंगिंग में कदम रखा। 1975 में फिल्म 'संकल्प' में गाने 'तू ही सागर है तू ही किनारा' के लिए उन्हें फिल्मफेयर बेस्ट फीमेल प्लेबैक अवार्ड से नवाजा गया था। इसके बाद उन्होंने एक्टिंग में भी अपनी किस्मत आजमाई। उन्होंने 1970-80 के दशक में उलझन, संकोच, अपनापन और 'हेरा फेरी' जैसी फिल्मों में काम किया। 1986 में उन्होंने लंदन के रॉयल अल्बर्ट हॉल में फेस्टिवल ऑफ इंडियन म्यूजिक में भी प्रस्तुति दी। उनकी आवाज आखिरी बार 1996 की फिल्म 'खामोशीः द म्यूजिकल' के गाने 'सागर किनारे भी दो दिल' में सुनाई दी, जिसे उनके भाइयों जतिन-ललित ने कंपोज किया था। सुलक्षणा पंडित का एक्टिंग करियर 1970 और शुरुआती 80 के दशक में अपने शिखर पर था। उस दौर में वह बॉलीवुड की जानी-मानी अभिनेत्रियों में से एक थीं। उन्होंने उस समय के लगभग सभी टॉप एक्टर्स के साथ काम किया।

उनका फिल्मी सफर 1975 में फिल्म 'उलझन' से शुरू हुआ था। इसके बाद उन्होंने

अनिल गांगुली की फिल्म 'संकोच' (1976) में ललिता का किरदार निभाया, जो उपन्यास परिणीता पर आधारित थी। उन्होंने बंगाली सिनेमा में भी काम किया। उन्होंने 1978 में फिल्म 'बंदी' में दिग्गज अभिनेता उत्तम कुमार के साथ काम किया। सुलक्षणा पंडित ने अपने दौर के कई बड़े कलाकारों के साथ काम किया। जितेन्द्र के साथ खंजर, संजीव कुमार के साथ उलझन (1975) और बजरंगबली (1976) में अभिनय किया। राजेश खन्ना के साथ भोला भाला (1978) और बंधन कच्चे धागों का (1983) में स्क्रीन शेयर की। विनोद खन्ना के साथ उनकी फिल्मों में हेरा फेरी (1976) और आरोप (1974) शामिल हैं। इसके अलावा, शशि कपूर के साथ उन्होंने चंबल की कसम (1980) और शत्रुघ्न सिन्हा के साथ अमीरी गरीबी (1974) में काम किया था। उन्होंने खानदान, चेहरे पे चेहरा, धर्म कांटा और 'वक्त की दीवार' जैसी फिल्मों में यादगार भूमिकाएं निभाई।

उनका करियर एक्टिंग और गायिकी दोनों में समृद्ध रहा, मगर बाद में उन्हें प्रोफेशनल और पर्सनल जिंदगी में मुश्किलों का सामना भी उन्हें करना पड़ा। सुलक्षणा पंडित ने कभी शादी नहीं की। उनके और एक्टर संजीव कुमार के बीच एक अनकही कहानी रही, जिसने उनकी जिंदगी में गहरा असर डाला। संयोग है कि 6 नवंबर को ही संजीव कुमार की पुण्यतिथि होती है। अब इसी दिन सुलक्षणा ने भी दुनिया को अलविदा कहा। इसके अलावा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी मुश्किलों और आर्थिक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा। उनके जाने से फिल्म और संगीत जगत को एक भारी नुकसान हुआ है। सुलक्षणा पंडित की मधुर आवाज हमेशा चाहने वाले याद करेंगे।

'बॉर्डर 2' में वरुण धवन का फौजी लुक

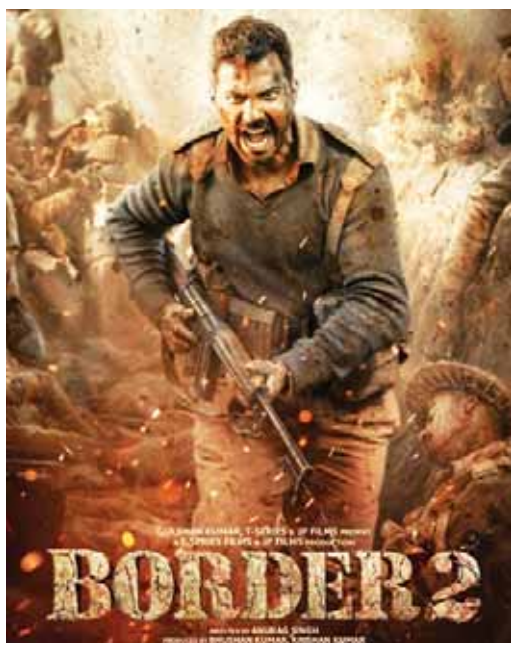

अनुराग सिंह के निर्देशन में बनने वाली मोस्ट अवेटेड देशभक्ति फिल्म 'बॉर्डर 2' से एक्टर वरुण धवन का पहला इंटेंस लुक सामने आ गया है। टी-सीरीज फिल्म्स ने पोस्टर साझा करते हुए वरुण को सेना की वर्दी में एक सशक्त और दृढ़ निश्चयी सैनिक के रूप में दिखाया। इससे पहले सनी देओल का भी लुक सामने आ चुका है, जिसे दर्शकों ने खूब प्यार दिया। अब वरुण धवन के फौजी लुक ने फिल्म को लेकर एक्साइटमेंट दोगुनी कर दी।

'बॉर्डर-2' से सामने आए वरुण धवन के पहले फौजी लुक के पोस्टर में वह युद्ध भूमि में हाथ में बंदूक लिए, गुस्से में दुश्मनों की ओर बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। उनके चेहरे पर देश के लिए लड़ने की इच्छा साफ झलकती है। मेकर्स ने इस पोस्टर को जारी करते हुए कैप्शन में लिखा 'बॉर्डर उसका फर्ज है और भारत उसका प्यार! 'बॉर्डर-2' 23 जनवरी, 2026 को रिलीज होगी।'

फिल्म में वरुण के साथ सनी देओल, दिलजीत दोसांझ, अहान शेट्टी, मेधा राणा, मोना सिंह और सोनम बाजवा भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म का निर्माण भूषण कुमार, जेपी दत्ता और निधि दत्ता ने मिलकर किया है। 'बॉर्डर-2' 1997 में रिलीज हुई जेपी दत्ता की निर्देशित क्लासिक युद्ध फिल्म बॉर्डर का अगला भाग है। मूल फिल्म में सनी देओल, सुनील शेट्टी, जैकी श्रॉफ, अक्षय खन्ना और सुदेश बेरी जैसे कलाकारों की दमदार भूमिकाओं ने दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ा था। यह फिल्म 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध की एक महत्वपूर्ण घटना पर आधारित थी और उस वर्ष की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर बनकर उभरी थी।

रियल बॉक्स

'हक़' से फिर चर्चित हुआ शाहबानो विवाद

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

का फिल्मों के साथ कानूनी विवाद जुड़े होना नई बात नहीं है। ऐसी फिल्मों की कहानी बहुत लंबी है। ऐसी कई फ़िल्में हैं, जो रिलीज से पहले कानूनी झमेलों में फंसी और निपटारे के बाद ही ही उन्हें परदे का मुंह देखना नसीब हुआ। कई फ़िल्में तो इतनी ज्यादा उलझन में आई कि वास्तविक फिल्म कभी रिलीज ही नहीं हो सकी। ऐसी फिल्मों में आपातकाल के दौर की फिल्म 'किस्सा कुर्सी का' विवाद सबसे ज्यादा चर्चित हुआ। उसके बाद भी कई फिल्मों को लेकर ऐसे विवाद हुए। ताजा दौर में इमरजेंसी, जॉली एलएलबी-3, छावा और मराठी फिल्म 'फुले' भी ऐसे मसलों में फंसकर निकली। नया विवाद इंदौर के चर्चित शाहबानो प्रकरण पर आधारित फिल्म 'हक़' को लेकर उठा, जिसने मुस्लिम महिलाओं के अधिकार की नींव रखी। इस मसले पर 1985 में सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों पर नई बहस छेड़ दी थी। तीन तलाक की प्रथा के खिलाफ उनकी लड़ाई ने न सिर्फ व्यक्तिगत न्याय की मांग की, बल्कि यह फैसला पूरे समाज के लिए मिसाल बना। इसके 33 साल बाद, जब 2019 में तीन तलाक को अवैध घोषित करने वाला कानून लागू हुआ, तो यह शाहबानो की उस जीत का प्रतीक था, जो अलख उन्होंने जगाई थी। अब इस संघर्ष की कहानी बड़े परदे उतारी गई, जिस पर कानूनी विवाद हुआ। लेकिन, हाई कोर्ट ने इसे स्वीकार नहीं किया और फिल्म की रिलीज को हरी झंडी दिखाई। फिल्म 'हक' के जरिए अब दुनिया तीन तलाक को कोर्ट ले जाने वाली शाहबानो के संघर्ष की कहानी देखेगी।

यह फिल्म एक ड्रामा है, जो मोहम्मद अहमद खान बनाम शाह बानो बेगम मामले में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले से प्रेरित है। फिल्म पर्सनल लॉ और सेक्युलर लॉ के बीच की बहस को सामने लाती है। इसमें इमरान हाश्मी और यामी गौतम की मुख्य भूमिकाएं हैं। दरअसल, 'हक़' की कहानी जिग्ना वोरा की किताब 'बानोः भारत की बेटी' पर आधारित एक काल्पनिक और नाटकीय कहानी है। जबकि, वास्तव में यह घटना शाहबानो बेगम के पुरुष प्रधान समाज में अपने स्वाभिमान और हक़ के लिए लड़ी सच्ची घटना है। यह बहस मुस्लिम समाज में आज भी प्रासंगिक है। इस फिल्म में ये मुद्दे गंभीरता से उठाए गए हैं कि क्या न्याय के अवसर सभी के लिए समान नहीं होना चाहिए! अब एक राष्ट्र, एक कानून का समय आ गया! व्यक्तिगत आस्था और धर्मनिरपेक्ष कानून के बीच की कैसी रेखा होना चाहिए यह मुद्दा भी उठा।

इसके अलावा यह सवाल भी उठा कि क्या अब समान नागरिक संहिता की जरूरत महसूस नहीं हो रही। फिल्म ने ऐसे कई सवालों को पुरजोर तरीके से उठाया है। 'हक़' बनाने वाली जंगली पिक्चर्स ने हमेशा ही ऐसी फिल्में बनाई है, जो सामान्य से कुछ अलग होती हैं और समाज के पुराने नियमों को चुनौती देती हैं। राज़ी, तलवार और 'बधाई दो' जैसी फिल्में बनाने के बाद जंगली पिक्चर्स ने अब मुस्लिम महिलाओं के इस मुद्दे को उठाया। 'आर्टिकल 370' के बाद यामी गौतम 'हक़' में नए कलेवर में दिखाई दी। फिल्म में वे ऐसी मुस्लिम महिला की भूमिका में है, जो अन्याय के सामने झुकने से इंकार करती है। वह गलत तरीके से बेसहारा की गई औरत की भूमिका में है, जो अपने और अपने बच्चों के लिए धारा 125 के तहत अपने 'हक' की मांग करते हुए कोर्ट में एक बड़ी लड़ाई लड़ती है और अंततः जीतती है।

परित्यक्ता मुस्लिम महिलाओं को भरण-पोषण की राशि पाने के अधिकार की नींव जिस शाहबानो केस से ही पड़ी थी, उस पर बनी फिल्म 'हक' को

रिलीज से पहले कानूनी विवाद का सामना करना पड़ा। शाहबानो की बेटियों ने फिल्म की कहानी पर ऐतराज जताया। फिल्म में उनकी मां के निजी जीवन को दिखाया गया, जिस पर उन्होंने आपत्ति उठाई। सुप्रीम कोर्ट तक संघर्ष करने वाली इंदौर की महिला शाहबानो की बेटियों ने फिल्म पर ऐतराज जताया है कि फिल्म में उनकी मां के निजी जीवन को दिखाया गया है। उनका तर्क था कि फिल्म बनाने के लिए उनसे अनुमति नहीं ली गई। इस कारण फिल्म 'हक' की रिलीज पर रोक लगाने की मांग की गई। लेकिन, मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने फिल्म 'हक' की रिलीज पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। विवादों से परे शाहबानो की कहानी हमेशा याद दिलाएगी कि एक महिला की दृढ़ता कानून, समाज और परंपरा तीनों को बदलने की ताकत रखती है। अदालत ने कहा कि यह फिल्म स्पष्ट रूप से काल्पनिक और नाटकीय रूपांतरण है। फिल्म 1985 के सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले से भी प्रेरित है। फैसले में कहा कि फिल्म के डिस्क्लेमर में यह साफ लिखा है कि यह एक काल्पनिक रचना है, जो किसी व्यक्ति की सच्ची कहानी नहीं है। इसलिए इसे गलत चित्रण या मनगढ़ंत कहानी नहीं कहा जा सकता। अदालत ने माना कि जब कोई फिल्म वास्तविक घटनाओं से प्रेरित होती है, तो उसमें कुछ रचनात्मक छूट दी जा सकती है, और केवल कुछ व्यक्तिगत या नाटकीय विवरण जोड़ने से उसे आपत्तिजनक नहीं कहा जा सकता।

'हक़' के अलावा भी कई फिल्मों को लेकर अदालती विवाद हुए हैं। प्रतीक गांधी और पत्रलेखा की फिल्म 'फुले' पर भी 'ब्राह्मणों' के अपमान का आरोप लगा और विवाद हुआ। ब्राह्मण समुदाय ने फिल्म के खिलाफ आपत्ति जताई और उन्हें अपमानित करने का आरोप लगाया, विरोध के बाद सेंसर बोर्ड ने फिल्म में कई कट लगाए और आखिरकार सिनेमाघरों में दर्शकों के सामने फिल्म आने में सफल रही। 'फुले' सामाजिक कार्यकर्ता ज्योतिराव गोविंदराव फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले के जीवन पर आधारित है, जिन्होंने जातिगत भेदभाव के खिलाफ और महिलाओं के शिक्षा के अधिकार के लिए लड़ाई लड़ी थी। फिल्म 'इमरजेंसी' भी विवाद में फंसी। कंगना रनौत निर्देशित और अभिनीत फिल्म में वह पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के किरदार में नजर आई थीं। 1975 में लगाए गए 'इमरजेंसी' पर आधारित फिल्म की रिलीज को लेकर काफी विवाद हुआ। विरोध करने वालों ने ऐतिहासिक तथ्यों से छेड़छाड़ के आरोप लगाए थे। सेंसर ने कुछ कट के बाद फिल्म की रिलीज को अनुमति दी थी। विक्की कौशल और रश्मिका मंदाना की 'छावा' भी विवादों में रिलीज होने वाली फिल्मों की लिस्ट में है। लेकिन, इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 600 करोड़ का आंकड़ा भी पार किया।

सनी देओल, रणदीप हुड्डा जैसे कलाकारों की फिल्म 'जाट' को लेकर भी विवाद। फिल्म के एक सीन को लेकर ईसाई समुदाय ने नाराजगी जताई और फिल्म की टीम के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज कराई। समुदाय ने आरोप लगाया कि फिल्म में ईसाई समुदाय का अपमान किया गया और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाया। शाहबानो मामले पर बनी फिल्म 'हक़' में विवाद कुछ नहीं है। क्योंकि, शाहबानो प्रकरण सुप्रीम कोर्ट तक गया और वहां इस पर फैसला हुआ। यदि इस महत्वपूर्ण मामले पर फिल्म नहीं बनती, तो यह सामाजिक बदलाव सिर्फ कानूनी किताबों में दर्ज होकर रह जाता। शाहबानो का जीवन संघर्ष नई पीढ़ी के सामने नहीं आ पाता। शाहबानो के संघर्ष ने ही पहली बार मुस्लिम महिलाओं के अधिकार की नींव रखी। 1985 में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले ने मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों की दहलीज पर एक नई बहस छेड़ी थी। तीन तलाक की प्रथा के खिलाफ उनकी लड़ाई ने न सिर्फ व्यक्तिगत न्याय की मांग की, बल्कि पूरे समुदाय के लिए एक मिसाल बन गई। 33 साल बाद, जब 2019 में ट्रिपल तलाक को अवैध घोषित करने वाला कानून लागू हुआ, तो यह भी शाहबानो की जीत का प्रतीक था। अब ये संघर्ष बड़े पर्दे पर उतरा है। यामी गौतम और इमरान हाशमी की फिल्म 'हक' के जरिए दर्शक देखेंगे कि 3 तलाक को कोर्ट ले जाने वाली शाहबानो के संघर्ष की कहानी आखिर क्या थी!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सिनेमा में भी खूब चमकी सितारों की बेटियां

अशोक जोशी

नवी मुंबई के डीवी पाटिल स्टेडियम पर भारतीय बेटियों ने विश्वकप क्रिकेट में दक्षिण अफीका को हराकर एक नया इतिहास रखा। देश की इन बेटियों ने पूरी दुनिया में भारत का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया। क्रिकेट में बेटियों को यह नया

इतिहास में भले ही आधा दशक लग गया। लेकिन, हिंदी सिनेमा की बेटियों ने तो उसी समय से इतिहास लिखना शुरू कर दिया था, जिस समय हिंदी सिनेमा शैशवकाल से अंगडाईयां लेकर जवानी में कदम रखा था।

यदि बॉलीवुड की पहली बेटियों की बात की जाए तो वह थी खूबसूरत नायिका शोभना समर्थ की बेटियां नूतन समर्थ और तनुजा समर्थ। इन दोनों समर्थ बेटियों ने न केवल अपनी सुंदरता से बल्कि अपने अभिनय से भी एक नया इतिहास रचा है। नूतन का एक नया कीर्तिमान यह भी था कि जब वह सोलह साल की थी तो उनकी फिल्म नगीना प्रदर्शित हुई थी। इस फिल्म की खासियत यह थी कि इसे देखने के लिए खुद नूतन को इजाजत नहीं मिली क्यों कि फिल्म को ए सर्टिफिकेट दिया गया था और फिल्म प्रदर्शन के दौरान नूतन वयस्क नहीं थी। नूतन के बारे में उनके बेटे मोहनीश बहल ने एक बार यह भी कहा था कि उनके शरीर से चंदन की तरह खुशबू आती थी। यही कारण है कि फिल्म 'सरस्वती चन्द्र' में इंदीवर ने उनकी सुंदरता को लिपिबद्ध करते हुए कहा था चंदन सा बदन! नूतन तो उन चुनिंदा नायिकाओं में से एक है जिसने सबसे ज्यादा फिल्मफेयर पुरस्कार अपने नाम किए है।

नूतन की तुलना में हालांकि उनकी छोटी बहन उतनी सफल नहीं हुई, फिर भी नशा कर एक्सीडेंट कर जेल जाकर उन्होंने सनसनी फैलाई थी। वह ऐसी दबंग अभिनेत्री रह चुकी है, जो सरेआम शराब पीते या सिगरेट का धुआं उड़ाते देख जा सकती थी। भले ही तनुजा फिल्मों में ज्यादा सफल नहीं रही हो, लेकिन उनकी बड़ी बेटी काजोल ने सफलता की जो इबारत अपनी फिल्म 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' के साथ लिखी, वह आज भी सिने इतिहास में अमिट है। तनूजा के इतिहास को उनकी छोटी बेटी तनिष्का ने रचा, वह भी उनकी तरह फिल्मों में कुछ खास नही कर पायी है।

हिंदी सिनेमा में सफलता का इतिहास लिखने वाली दूसरी बेटी है बला की खूबसूरत नायिका नसीम बानो की विदेशों में पली बढी सायरा बानो, जिन्होंने 1962 में प्रदर्शित अपनी पहली ही फिल्म 'जंगली' से सफलता की कहानी लिख डाली, जो उनकी अंतिम फिल्म तक जारी रही। परदे पर कीर्तिमान रचने वाली सायरा बानो ने परदे के बाहर प्रेम कहानियां लिखने का इतिहास रचा। पहले वह शादीशुदा राजेन्द्र कुमार के प्रेम प्रसंग से चर्चित हुई फिर अपने से आधी उम्र के अभिनेता और हिंदी सिनेमा के धुरंधर दिलीप कुमार से निकाह रचाकर

इतिहास रच गई । शादी के बाद बॉलीवुड की इस ब्यूटी क्वीन की जिंदगी ही बदल गई। लोगों को उनका ग्लैमरस रूप नहीं बल्कि एक आदर्श और सेवाभावी पत्नी रूप दिखाई दिया।

इसी क्रम में सफलता का इतिहास रचने वाली बॉलीवुड की बेटी थी हिंदी सिनेमा के पुरोधा वी.शान्ताराम और उनकी पत्नी जयश्री की बेटी राजश्री जो अपनी पहली ही फिल्म गीत गाया पत्थरां से लोकप्रियता के शिखर पर जा पहुंची। साठ के दशक में राजश्री ने शम्मी कपूर , विश्वजीत, राज कपूर, जीतेन्द्र और धर्मेन्द्र जैसे नायक के साथ जानवर, ब्रहमचारी सगाई, सुहागरात, अराउंड द वर्ल्ड और 'मोहब्बत जिंदगी' जैसी कई सफल फिल्में दी और जिस समय वह सफलता के शिखर पर थी विदेशी युवक से ब्याह रचाकर एक नया इतिहास रच गई।

अपनी मां के पद चिन्हों पर चलते हुए बॉलीवुड

में सफलता का कीर्तिमान रचने में हिंदी सिनेमा के प्रथम परिवार कपूर बंधुओं की बेटियां करिश्मा कपूर और करीना कपूर ने भी सफलता के एक से बढ़कर एक कीर्तिमान लिखे हैं। रणधीर कपूर और बबीता की बड़ी बेटी करिश्मा कपूर सोलह साल से ही परदे पर दिखाई दी। अपनी पहली ही फिल्म से उसने सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ना आरम्भ किया और एक एक कर सफलता के नए इतिहास रचती गई। जिस कपूर परिवार में बेटियों का फिल्मों में काम करना वर्जित था। उसी कपूर परिवार की इस बेटी ने अपने चाचा शम्मी कपूर की तरह बगावत कर सफलता की कहानियां लिखना आरंभ कर दिया था।

करिश्मा कपूर की तरह उनकी छोटी बहन करीना ने भी अपनी पहली फिल्म 'बार्डर' से ही सफलता के कीर्तिमान रचना आरम्भ कर दिया। आरम्भ में उनकी रफ्तार अपनी बडी बहन से थोड़ी

सुस्त थी। लेकिन, एक बार जो उन्होंने रफ्तार पकड़ी तो दौड़ती ही चली गई। इन कपूर बेटियों ने न केवल फिल्मों में सफलता के कीर्तिमान रचे, बल्कि पहले से शादीशुदा पुरुषों से ब्याह रचकर दोनों बहनों ने एक नया कीर्तिमान रचा। बॉलीवुड की सफल बेटियों की इस परंपरा को महेश भट्ट और सोनी राजदान की बेटी आलिया भट्ट ने भी अपनी पहली फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' से सफलता का जो इतिहास रचा उसे अपने अभिनय से कुछ ऐसे अंदाज से आगे बढ़ाया कि दर्शक आश्चर्यचकित रह गए। जिस आलिया को दर्शक बेवकूफाना बातों के लिए जानते थे, उसी आलिया ने राजी, गंगूबाई, ब्रह्मास्त्र, और 'आरआरआर' जैसी सफल फिल्मों से सफलता का नया इतिहास रचा। इतना ही नहीं 'राजी' और 'गंगूबाई' जैसी फिल्मों में तो उन्होंने स्थापित नायिकाओं को अपने अभिनय से चुनौती दी है।

ऐसा नहीं है कि बॉलीवुड की तमाम बेटियों ने ही सफलता के कीर्तिमान रचे हैं। कुछ ऐसी बेटियां भी हैं, जो इस कसौटी पर खरी नहीं उतरी हैं। इनमें सबसे पहले नाम आता है किशोर साहू की बेटी नयना साहू जो अपनी पहली फिल्म 'हरे कांच की चूड़ियां' के बाद आगे दिखाई नहीं दी। उनकी इस परम्परा को वसंत जोगलेकर की बेटी मीरा जोगलेकर ने आगे बढ़ाया। उनकी पहली फिल्म 'एक कली मुस्काई' में जॉय मुखर्जी और अशोक कुमार जैसे लोकप्रिय अभिनेता का काम और मदनमोहन का हिट संगीत भी उन्हें बचा नहीं पाया।

इसी तरह फिल्मों में पुलिस इंस्पेक्टर की भूमिका में विश्व कीर्तिमान रचने वाले अभिनेता जगदीश राज की बेटी अनीता राज ने भले ही अपनी पहली फिल्म 'प्रेम गीत' में दर्शकों को लुभाया हो या धर्मेन्द्र के साथ सनसनी फैलाई हो, लेकिन परदे पर उनकी पारी लम्बी नहीं चल पायी। इसी तरह माला सिन्हा की बेटी प्रतिभा सिन्हा ,अमीता की बेटी साहिबा, सारिका की बेटी श्रुति हासन, हेमा मालिनी और धर्मेन्द्र की बेटी ईशा देओल तथा श्रीदेवी की बेटियां जाह्नवी और खुशी कपूर अपनी मां की तरह इतिहास न रच पायी। फिर भी इस बात से कोई इनकार नहीं किया जा सकता कि हिन्दी सिनेमा की बेटियों ने पुरातनपंथी और रूढ़िवादिता की जंजीर को तोड़ने का करिश्मा तो कर दिखाया ही है।

(ऋत्विक) घटक-शतक!

प्रकाश पुरोहित

फिलमकार ऋत्विक घटक की **मयनोशी के किस्से** कम नहीं हैं, क्योंकि रोज की बात थी। एक बार दिल्ली गए तो दोस्तों के साथ शुरू हो गए। कुछ देर बाद पता चला कि शराब खत्म हो गई। अब क्या किया जाए... कि रात के ग्यारह बज रहे थे। तय किया कि शहर से दूर किसी पुराने अड्डे पर शराब की तलाश की जाए। बाहर निकल कर आए तो टैक्सी ड्रायवर सरदारजी नजर आ गए। सभी टैक्सी में बैठ, शराब की तलाश में निकल पड़े।

जहां चाह... वहां शराब! आखिरकार एक अड्डे पर शराब मिल ही गई और सभी ने छक कर पी! आधी रात गुजर चुकी थी। टैक्सी ड्रायवर सरदारजी को रोके रखा था कि वापस भी तो दिल्ली जाना था और उन दिनों रात में टैक्सी, ऐसी सुनसान जगह, मिलना भी मुश्किल। सभी मदहोश सवार हो गए टैक्सी में... और झूमते-झामते आ गए अपने ठिकाने पर।

टैक्सी से सभी उतरे और एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। सरदारजी ने बिल बताया तो पता चला कि किसी की जेब में एक रुपया भी नहीं है। सभी 'मेरे पास तो खत्म हो गए...' कहते रहे। सरदारजी को समझ आ गया कि सभी कड़के हैं। उसने धमकी दे दी 'या तो पैसे दो... या फिर थाने ले जाऊंगा।' सभी घबरा गए, लेकिन ऋत्विक घटक शांत रहे।

'चलो, इंदू के यहां चलो... दिलवाता हूं पैसे।' कहते हुए सभी को टैक्सी में बैठने के लिए कहा।

'किधर है तुम्हारी इंदू... किधर चलूं?' ड्रायवर ने गुस्से से पूछा।

'क्या तुम प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का घर जानते हो?' ऋत्विक घटक ने पूछा तो ड्रायवर हंस दिया कि मदहोशी में आमतौर पर ऐसी ही बातें होती हैं। गनीमत रही, खुद को राष्ट्रपति नहीं बताया।

'ठीक... ठीक बताइए... कहां चलना है?' ड्रायवर ने झल्ला कर पूछा।

'कहा ना, इंदू के यहां चलो... तुम्हें पैसे मिल जाएंगे।' ऋत्विक घटक ने आखिरी सिगरेट का अंतिम कश लगाते हुए कहा।

ड्रायवर भी गुस्से में आ गया 'चलो, फिर आज ले ही चलता हूं इंदू के घर...।' कहते हुए उसने टैक्सी पीएम हाउस के रास्ते पर डाल दी। कार, ठीक बंगले के सामने जाकर रुकी। उन दिनों टोकाटाकी या सुरक्षा के आज जैसे इंतजाम तो थे नहीं।

गार्ड ने पूछा तो कहा 'कहो कलकत्ता से ऋत्विक घटक आए हैं।' किसी को समझ नहीं आ रहा था कि यह शराब का असर था या फिर कुछ और।

गार्ड ने अंदर फोन लगा कर बताया... तो इंदिराजी के सचिव आर.के. धवन दौड़ते हुए आए। जैसे ही ऋत्विक घटक को देखा तो फौरन इंदिराजी को फोन लगाया 'ऋत्विक घटकजी आए हैं... साथ में तीन-चार दोस्त भी हैं।'

'खूब पी ली होगी, पैसे खत्म हो गए होंगे...! ऐसा करो, टैक्सी का बिल अदा कर दो। टैक्सी ड्रायवर से कहो कि घटकजी को अशोका होटल ले जाएं और वहां उनके ठहरने का इंतजाम कर दें। सुबह उन्हें यहां मेरे पास लेकर आएं... नाश्ते पर उनका इंतजार करूंगी।'

धवन ने सरदारजी से कहा तो वह लगभग कांपने ही लगा कि ऐसा चमत्कार तो कभी देखा नहीं। धवन ने टैक्सी का बिल एडवांस चुका दिया और कहा 'सुबह साहब को यहां लेकर आ जाना।' टैक्सी ड्रायवर उस रात घर नहीं गया... और होटल के बाहर ही टैक्सी में बैठा रहा!

जब सुबह ऋत्विक घटक को लेने होटल के कमरे में गया तो... पता चला रात में ही गायब हो गए हैं। सरदारजी खाली हाथ (टैक्सी) इंदिराजी के बंगले पहुंचे और आर.के. धवन को बताया। धवन ने इंदिराजी को जानकारी दी... तो उनका जवाब था 'मुझे पता था... नहीं आएंगे। रहने दो।'

(इंदिराजी का ऋत्विक से ऐसा रिश्ता कैसे था... क्यों था..., तो पता चला कि इंदिरा गांधी को शांति निकेतन में ऋत्विक घटक ने पढ़ाया था।)

★ ★ ★

कमल हासन की दिली ख्वाहिश थी कि ऋत्विक घटक की किसी फिल्म में काम

करें। एक दिन ऋत्विक घटक सीधे पहुंच गए कमल हासन के घर। 'अच्छी पटकथा लिखी है, बिलकुल तुम्हारे लायक है' कहते हुए बगल में दबा रजिस्टर दिखाया। मतलब साफ था मयनोशी का इंतजाम किया जाए और फिर इत्मीनान से पटकथा सुनी जाए!

कमल हासन ने बंगले के बाहरी बगीचे में खाने-पीने का इंतजाम करवा दिया। पहले घूंट के साथ ही ऋत्विक घटक ने रजिस्टर खोला और पढ़ने लगे। कहानी बेहद दिलचस्प थी, इसलिए कमल हासन की भी दिलचस्पी बढ़ने लगी। पूरी बोतल खाली होते-होते... बारिश शुरू हो गई और ऋत्विक घटक भी लगभग बेहोशी की हालत में आ गए, लेकिन तब तक रजिस्टर पूरा हो चुका था और कमल हासन को कहानी बेहद पसंद आई।

बारिश तेज होने लगी तो कमल ने नौकरों को बुलाकर पहले घटक सा'ब को उठाकर अंदर पहुंचाया और फिर खुद उनका रजिस्टर लेकर अपने कमरे में चले गए। यूं ही लेटे-लेटे कमल हासन के मन में फिर से कहानी पढ़ने की इच्छा हुई तो उन्होंने रजिस्टर उठा लिया... मगर देखते क्या हैं... सिवाय टाइटल के... पूरा रजिस्टर कोरा था। दंग रह गए कमल... कि क्या कमाल का शख्स है कि पूरे समय पन्ने पलटते यूं पढ़ता रहे... जैसे एक-एक शब्द लिखा हो...! कमल हासन के पास वो कोरा रजिस्टर आज भी है!

(ये सारे संदर्भ इसलिए कि ऋत्विक घटक के सौ साल इसी हफ्ते पूरे हुए हैं! कहते हैं कोलकाता या पुणे इंस्टीट्यूट में कभी मदहोशी की हालत में नहीं गए)।

दृष्टिकोण

डॉ. जीवन एस रजक

लेखक संयुक्त कलेक्टर एवं साहित्यकार हैं।

मातृभूमि की आध्यात्मिक साधना वंदे मातरम्

वंदे मातरम् की रचना 7 नवम्बर 1875 को पूर्ण हुई थी। जिसका प्रकाशन बंकिमचन्द्र चटर्जी के विश्व प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' में अन्तर्निहित गीत के रूप में 1882 में हुआ था। इस गीत ने सदियों से सुसुप्त भारत देश को जागृत किया और भारत की स्वाधीनता में अहम योगदान दिया। यह गीत केवल राष्ट्रभक्ति तक सीमित नही है, बल्कि यह भारतीय दर्शन, शक्ति तत्व और भक्ति परम्परा का गूढ़ आध्यात्मिक दर्शन भी प्रस्तुत करता है। भारतीय परम्परा में मातृभूमि को भौतिक वस्तु, नही बल्कि जीवंत चेतना माना गया है। अथर्ववेद में कहा गया है- ''माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।'' (अथर्ववेद- 12/1/12) अर्थात् भूमि मेरी माता है, और मैं उसका पुत्र हूँ। वंदे मातरम् इसी पुण्य भावना का प्रकटीकरण है। यह गीत मातृभूमि की वंदना का गीत है, उस शक्ति की वंदना का गीत है, जो संपूर्ण जीवन को पोषित करती है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जिस गीत ने सबसे प्रबल राष्ट्रीय चेतना, उत्साह और मातृभूमि के प्रति भक्ति का संचार किया है, वह है- 'वंदे मातरम्'। बंकिमचन्द चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत भारत की सांस्कृतिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक और राष्ट्रीय चेतना का सजीव प्रतीक है। इसमें निहित भाव अपनी 'मातृभूमि के रूप में ईश्वर के दर्शन' का दार्शनिक उद्बोधन है।

वंदे मातरम् की रचना 7 नवम्बर 1875 को पूर्ण हुई थी। जिसका प्रकाशन बंकिमचन्द्र चटर्जी के विश्व प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' में अन्तर्निहित गीत के रूप में 1882 में हुआ था। इस गीत ने सदियों से सुसुप्त भारत देश को जागृत किया और भारत की स्वाधीनता में अहम योगदान दिया। यह गीत केवल राष्ट्रभक्ति तक सीमित नही है, बल्कि यह भारतीय दर्शन, शक्ति तत्व और भक्ति परम्परा का गूढ़ आध्यात्मिक दर्शन भी प्रस्तुत करता है। भारतीय परम्परा में मातृभूमि को भौतिक वस्तु, नही बल्कि जीवंत चेतना माना गया है। अथर्ववेद में कहा गया है- ''माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।'' (अथर्ववेद- 12/1/12) अर्थात् भूमि मेरी माता है, और मैं उसका पुत्र हूँ। वंदे मातरम् इसी पुण्य भावना का प्रकटीकरण है। यह गीत मातृभूमि की वंदना का गीत है, उस शक्ति की वंदना का गीत है, जो संपूर्ण जीवन को पोषित करती है।

'वंदे मातरम्', अर्थात् हे मातृभूमि! तुझे प्रणाम। यह गीत पुण्य भारत भूमि को देवी स्वरूप मानकर उसकी वंदना का गीत है। यह गीत भारत की आत्मा का स्वर है। यह एक ऐसा मंत्र है, जो भक्ति, दर्शन और संस्कृति तीनों के समन्वय से उपजा है। वंदे मातरम् की प्रथम पंक्तियाँ, भारत भूमि के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करती हैं- ''सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्, शस्य श्यामलाम् मातरम्। अर्थात् हे मातृभूमि! ''तू जल से परिपूर्ण है, फल और अन्न से सम्पन्न है, चन्दन की शीतल पवन से शीतल है और धान्य से हरित भूमि है।'' यह दृश्य जीवनदायिनी भारत भूमि का दार्शनिक संकेत है। यहाँ 'जल', 'फल' और 'शस्?य' भौतिक समृद्धि का प्रतीक है, जबकि 'मलयजशीतलाम्' आध्यात्मिक शांति और प्राणशक्ति का प्रतीक है। इस प्रकार यह गीत हमें भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक अनुभूति की ओर ले जाता है। इस गीत में वह शक्ति है, जो भारत को आत्मबल, तेज और आध्यात्मिक वैभव प्रदान करती है।

'वंदे मातरम्' भारतीय दर्शन के दो प्रमुख तत्वों- अद्वैत वेदांत और शक्ति सिद्धांत का अद्भूत संगम प्रस्तुत करता है। आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत के अनुसार संपूर्ण जगत ब्रह्म की ही अभिव्?यक्ति है- ''सर्वं खल्विदं ब्रह्मं।'' इस दृष्टि से भारतभूमि स्?वयं ब्रह्मस्?वरूपा है और 'ब्रह्म' की ही अभिव्?यक्ति है। इसलिए जब हम 'वंदे मातरम्' कहते हैं, तो हम वास्?तव में ब्रह्मस्?वरूपा प्रकृति को

प्रणाम करते है और मातृभूमि के माध्?यम से ईश्?वर की आराधना करते है।

इसी तरह वंदेमातरम् में 'शक्ति' के दर्शन भी सहजता से होते हैं। देवी महात्म्य में जिस तरह से शक्ति को सृष्टि की मूल प्रेरक ऊर्जा कहा गया है- ''या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमो नमः।'' उसी तरह बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने 'वंदे मातरम्' में मातृभूमि को एक साथ दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में प्रस्तुत किया है-

त्वंहि दुर्गा दश प्रहरण धारिणी
कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनि

अर्थात् हे मातृभूमि! तू ही दसों अस्त्र-शस्त्र धारण करने वाली दुर्गा है, तू ही कमलदल पर विचरण करने वाली लक्ष्मी है और तू ही विद्या देने वाली वीणापाणि सरस्वती है। यह त्रिगुणात्मक रूप भारतीय दर्शन के शक्ति सिद्धात का प्रतीक है। सृष्टि, स्थिति और संहार की तीनो शक्तियाँ मातृभूमि में ही समाहित है। बंकिमचन्द्र की भारतमाता इसी शक्ति स्वरूपा देवी का मूर्त रूप हैं, जो केवल भौगोलिक भूखण्ड नही है, बल्कि चेतना और आत्मबल की अधिष्ठात्री भी है।

वंदे मातरम् कि सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि इसमें राष्ट्रभक्ति और ईश्वर भक्ति में कोई भेद नही है। इस गीत में देश भक्ति को धर्म और देव भक्ति के स्तर तक उठाया गया है। इस गीत में मातृभूमि साक्षात् ईश्वर की अभिव्यक्ति है। यह वही दृष्टि है, जो श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्त होती है, ''ईश्वर सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।'' (श्रीमद्भगवद्गीता ङ्क 18/61) अर्थात् 'परमेश्?वर प्र?येक जीव के हृदय में है'। और ÷ममै वांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः÷ (श्रीमद्भगवद्गीता ङ्क 15/7) अर्थात् 'इस बद्ध जगत के सारे जीव मेरे ही शाश्?वत अंश है।'

इस प्रकार यदि प्रत्येक हृदय में ईश्वर वास करता है, तो राष्ट्र के सामूहिक स्वरूप में भी वह विद्यमान है। इस दृष्टि से 'मातृभूमि' की वंदना भी 'ईश्वर' की भक्ति का ही एक रूप है। यह दर्शन भारत की उस सार्वभौमिक भावना को प्रकट करता है, जहां धर्म, प्रकृति, समाज और राष्ट्र सब एक ही सत्ता की अभिव्यक्तियां हैं। इसलिए वन्दे मातरम् का गायन केवल राष्ट्रप्रेम की भावना का प्रकटीकरण मात्र नहीं है, बल्कि मातृभूमि के प्रति आध्यात्मिक समर्पण भी है।

भारतीय संस्कृति में 'मातृत्व' को सर्वोच्च आदर्श माना गया है। माता केवल जन्मदात्री नहीं बल्कि पालक, शिक्षिका और संरक्षिका भी होती है। 'वंदे मातरम' में भारत माता को यही रूप प्रदान किया गया है। वह पालनकर्ता (शस्यश्यामला), प्रेममयी (सुहासिनी), आशीषदात्री (वरदायिनी) और संरक्षिका (रिपुदलवारिणी) है। यहीं मातृत्व भाव भारतीय संस्कृति के मूल में है। आनंदमठ में जिस तरह संन्यासी अपनी मातृभूमि के लिए त्याग को सर्वोच्च धर्म मानते हैं, उनकी राष्ट्रनिष्ठा हमें मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना से भर देता है। इसलिए 'वंदे मातरम्' हमें आत्मकेंद्रित जीवन से उठाकर समष्टिगत चेतना और राष्ट्रनिष्ठा की ओर ले जाता है।

जब कोई भारतीय 'वंदे मातरम्' का उच्चारण करता है, तो वह केवल अपने देश के लिए सम्मान का प्रकटीकरण नहीं करता, बल्कि वह अपनी मातृभूमि की आध्यात्मिक साधना करता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में यह गीत राष्ट्रीय चेतना का सबसे बड़ी प्रेरणा था। स्वाधीनता के महायज्ञ में 'वंदे मातरम्' की एक जीवंत भूमिका रही है।

दुःखद है, कि मोहम्मद अली जिन्ना जैसे धार्मिक कट्टरपंथियों ने 'वंदे मातरम्' का हमेशा विरोध किया है। 'वंदे मातरम्' को शरीयत के विरुद्ध माना है और इसी तुष्टिकरण के करण 'वंदे मातरम्' को मूल पाठ का छोटा कर दिया गया है।

आज भी कुछ धार्मिक कट्टरपंथी 'वंदे मातरम्' को शरियत के खिलाफ बताकर उसका विरोध करते रहते हैं। लेकिन इसका विरोध करना संकुचित मानसिकता का प्रतीक है। 'वंदे मातरम्' मातृभूमि की स्तुति का गीत है, और कोई भी धर्म अपने राष्ट्र, अपनी 'मातृभूमि' से ऊपर नहीं हो सकता। इसलिए 'वंदे मातरम्' का विरोध राष्ट्र का विरोध है, और संवैधानिक कर्तव्यों से विमुखता है।

'वंदे मातरम्' पुण्य भारत भूमि का स्तुतिगान है। उस भारत भूमि का, जिसका यशोगान देवता भी करते हैं - गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारत भूमि-भागे । स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ।। (श्री विष्णुपुराण 2/3/24) अर्थात् देवता भी निरंतर यही गान करते हैं, कि जिन्होंने स्वर्ग और मोक्ष के मार्गभूत भारत भूमि पर जन्म लिया है, वे पुरूष हम देवताओं से भी अधिक धन्य है।

'वंदे मातरम्' अपनी 150 वर्षों की यात्रा पूर्ण कर चुका है। इन 150 वर्षों में यह गीत मातृभूमि की आराधना और राष्ट्रीय चेतना का सबसे बड़ा सूत्रधार रहा है। आज के युग में जब संसार भौतिकता और विभाजन की प्रवृत्ति से ग्रस्त है, और राष्ट्रवाद को कभी-कभी संकीर्ण दृष्टि से देखा जाता है, तब 'वंदेमातरम्' का दार्शनिक अर्थ हमें संकीर्ण और कुंठित मानसिकता से ऊपर उठाकर यह याद दिलाता है कि सच्चा राष्ट्रप्रेम भौतिक नहीं आध्यात्मिक होता है।

'वंदे मातरम्' भारतीय दर्शन का मूल है, जो भक्ति को राष्ट्रसेवा में और राष्ट्रसेवा को आत्मसाधना में रूपांतरित करता है। यह गीत हमारे जीवन, संस्कृति, और राष्ट्र चेतना का आध्यात्मिक उद्घोष है, जो कहता है कि, भारत केवल एक भौगोलिक भूखण्ड नही है, बल्कि 'ब्रह्म' का सजीव प्रतिमान है।

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

महिला है तो... नारीवाद भी जरूरी!

कुछ दिन पहले इंदौर में ऑस्ट्रेलियाई महिला खिलाड़ियों से भी बेहूदा हरकत हुई थी और 'ज्ञानियों' ने उन खिलाड़ियों की ही गलती बता दी। जब भारत की लड़कियों ने वर्ल्ड-कप जीत लिया तो सबने खुशी मना ली, खूब पटाखे चला लिए, लेकिन ये ही लड़कियां हैं, जिन्हें दो मैच पहले तक किचन में लौट जाने की सलाह मिल रही थी। ऐसा कहते कोई नहीं सोचता कि जब पुरुष टीम हारती है तो उन्हें कहां भेजा जाता है? तो महिला टीम के लिए यह सलाह क्यों? वजह सिर्फ यही है कि ऐसी सोच वाला इंसान धरती के किसी भी कोने में हो, महिला को कमतर ही मानता है और इसलिए घटिया हरकत की कोशिश करता है।

मैक्सिको की प्रेसिडेंट क्लॉडिया शिंबॉम का वीडियो दिखाई दे रहा है, जिसमें लोगों से मिल रही हैं। उसी दौरान आदमी पीछे से आता है। चूमने और छूने की कोशिश करता है। सिक्योरिटी उसे तुरंत हटा देती है, लेकिन वीडियो दिमाग हिला देता है। गुस्से, अपमान और दुःख की लहर आती है और इसमें हम डूबने लगते हैं। क्या फर्क पड़ता है कि देश की पहली नागरिक हैं और उनके पास सिक्योरिटी है। क्या फर्क पड़ता है कि दुनिया के सरदार बने बैठे अमेरिकी राष्ट्रपति को पलट कर जवाब दे सकती हैं, आखिर औरत है और दुनिया में उसका दर्जा हर मर्द से नीचे ही रहेगा, क्योंकि कोई भी राह चलता यूं उसे छूने की कोशिश कर सकता है।

कुछ दिन पहले इंदौर में ऑस्ट्रेलियाई महिला खिलाड़ियों से भी बेहूदा हरकत हुई थी और 'ज्ञानियों' ने उन खिलाड़ियों की ही गलती बता दी। जब भारत की लड़कियों ने वर्ल्ड-कप जीत लिया तो सबने खुशी मना ली, खूब पटाखे चला लिए, लेकिन ये ही लड़कियां हैं, जिन्हें दो मैच पहले तक किचन में लौट जाने की सलाह मिल रही थी। ऐसा कहते कोई नहीं सोचता कि जब पुरुष टीम हारती है तो उन्हें कहां भेजा जाता है? तो महिला टीम के लिए यह सलाह क्यों? वजह सिर्फ यही है कि ऐसी सोच वाला इंसान धरती के किसी भी कोने में हो, महिला को कमतर ही मानता है और इसलिए घटिया हरकत की कोशिश करता है।

ये नमूने उन महिलाओं के हैं, जो घर और किचन की चारदीवारी से बाहर निकल कर लीडर हैं। सोचिए आम महिला के साथ क्या होता होगा। नारीवाद सिर्फ इस बात में नहीं है कि महिला नौकरी करे या मर्जी के कपड़े पहने, यह लगातार संघर्ष है, जिसमें मानना जरूरी है कि हर महिला, फिर किसी भी धर्म, जाति, ओहदे या पैसे की ताकत वाली हो, लेकिन कहीं न कहीं यह खतरा हमेशा है कि उसे किसी भी पल यूं अकेला और घिरा महसूस करवाया जा सकता है। उससे भी बड़ा खतरा यह है कि इन सारी महिलाओं के दर्द को विरासत दे दी गई है और यह भी आदर्श सोसाइटी की ही देन है।

प्रेसिडेंट हैं क्लॉडिया तो उनकी बात को तवज्जो भी है और उनकी शिकायत पर ध्यान भी दिया जाएगा, लेकिन रोजाना घर और बाहर महिलाएं जिस तरह जुल्म झेल रही हैं, उनकी सुनवाई कहीं नहीं है। यही वजह है कि समाज में महिलाएं हैं तो नारीवाद भी होना चाहिए।